।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 मई 2025 | वर्ष 18 अंक 02

कुल पृष्ठ - 30 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

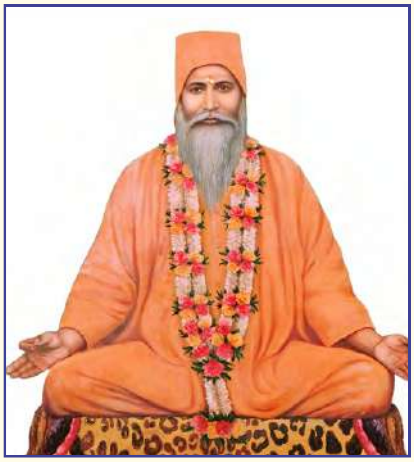

।। भजनु रागु टोड़ी ।।

कथा सुनि कोन कयुइ वीचारु
ऊजल देही ईएं गंवायइ, बिना भजन करितार ।। टेक ।।
कथा हरीअ जी आहे जग में, सभ कर्मनि खां सारु ।
सुणी सुणी ना समुझ पिरायइ, जनमु कयुइ बेकारु ।। 1 ।।
मोहु ममतु मतिसरु ना छदि्युइ, काम क्रोधु अहंकारु ।
करण लगें नितु पचर पराई, तांते तोहि धिकारु ।। 2 ।।
वणिजारो थी जंहिं लइ आएं, सो न कयुइ वापारु ।
धरमराइ उति कीन छदींदुइ, परो कंदुइ आचारु ।। 3 ।।
मन जी मसु करि सुरती लेखणि, थीउ तूँ लिखणेहारु ।
कहे ''टेऊँ'' लिखु रामु नामु उर,पाईं मोक्ष द्वारु ।। 4 ।।

सन्त-महात्मा लोग तो उपने सदुपदेशों द्वारा रात-दिन समस्त जीवों को जगाते रहते हैं कई लोग सन्तों के सत्संग और कथाएँ तो बहुत सुनते हैं परन्तु सन्तों ने क्या कहा यह बात या तो भूल जाते हैं या विचार नहीं करते । क्योंकि सन्तों के उपदेश को तो उत्तम बुद्धि ही ग्रहण करती है । इसलिए (१) तेली (२) मोती और (३) नौदी, ये तीन प्रकार की बुद्धियों की श्रेणियां विद्वानों द्वारा बतलायी गयी हैं । १. जैसे नौद (घोड़े की पीठ पर पहले एक गद्‌दा रखा जाता है जिस पर जीन कसी जाती है उसे नौद कहते हैं) में सूआ घुसेड़ कर फिर निकाल देने पर सुराख दिखलाई नहीं पड़ता । वैसे ही नौदी बुद्धि वाले मनुष्य को भी सन्तों का उपदेश असर नहीं करता । एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देते हैं ।

२. जैसे मोती में जितना सुराख किया जाता है तो वह घट-बढ़ न होकर उतना ही सुराख बना रहता है, वैसे ही मोती बुद्धि वाले मनुष्य जितना कुछ सन्तों का उपदेश सुनते हैं तो उतना ही याद रखते हैं, और वही दूसरों को भी सुना देते हैं।

३. जैसे तेल की एक बूंद पानी से भरे थाल में डाल देने पर रंग-बिरंगी होकर पूरे थाल में फैल जाती है। वैसे ही तेली बुद्धि वाले मनुष्य के हृदय में गया हुआ सन्तों के उपदेश का एक वचन भी बड़े विस्तार को पा लेता है। तीन प्रकार की बुद्धियों की व्याख्या कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि सब लोग अपनी-अपनी बुद्धि का विकास कर सन्तों के

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

उपदेश को ग्रहण कर इस नर तन रत्न को सफल बनावें। आप इस संसार में व्यापारी बन कर आये हो, आप लोगों को सच का व्यापार करना चाहिये था, परन्तु सच के बदले झूठ को ही खरीद रहे हो। वहाँ प्रभु के दरबार में तो पूरा-पूरा न्याय होता है। इसलिए अभी भी बहुत समय पड़ा है सो आप अपनी बुद्धि को तेली बना कर राम-नाम का व्यापार कर मोक्ष पद को प्राप्त कर लो। तेली बुद्धि माने शुद्ध बुद्धि बनाने के लिये (१) शुद्ध सात्विक आहार (२) सत्संग (३) सत् शास्त्रों का चिन्तन और (४) नाम का अभ्यास, ये चार साधन बताये गये हैं। इस विषय पर और भी भजन बोल कर सत्संग समाप्त किया।

दहिरिनि नामक गाँव के भाई परचूराम जी ने गढ़ी आदूशाह में आकर गुरु महाराज जी को अपने गाँव के लिये प्रार्थना की। भाई परचूराम की प्रार्थना स्वीकार कर, गुरु महाराज जी दहिरिनि नामक गाँव को गये। वहाँ भी पाँच दिन रह कर नियमानुसार सत्संग करते रहे। एक दिन सत्संग में बैठे हुए भाई परचूराम जी ने उठकर सन्तान के लिये प्रार्थना कर कहा कि हे प्रभु! मुझे कोई सन्तान नहीं है। आप कृपा कर मेरी खाली झोली को भर के जायें। यह सुन कर गुरु महाराज जी ने सत्संग में प्रभु से प्रार्थना की। जिसके फलस्वरूप एक वर्ष बीतने पर भाई परचूराम जी को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। जिसका शुभ नाम तोतलदास रखा गया। वहाँ पाँच दिन सत्संग कर भाई चोइथराम, मुखी लहरूराम, भाई जशनराम आदि से मिल कर गुरु महाराज जी चक नामक गांव में पधारे । वहां रात वाले सत्संग में मनुष्य देही के विषय में बोलते हुए कहने लगे कि यह देव दुर्लभ मनुष्य शरीर भगवान के भजन के लिये ही मिला है । प्रभु के भजन बिना इस जीव का कोई भी साथी नहीं है, कुटुम्ब के लोग भी इस जीव को बीच में ही छोड़ देंगे ।

।। भजन राग तिलंग ।।

देस छोड़ परदेश में आये, साचा वणिज विहाना रे ।।टेक ।।
ऊठ मुसाफिर जागो जल्दी, नींद न कर नादाना रे ।। 1 ।।
इस जग की बाजार मंझारे, सत्संग खुला दुकाना रे ।।2 ।।
सन्त जनां की सेवा करके, हरि का दर्शन पाना रे ।।3 ।।
कहे ''टेऊँ सत्गुरु प्रसादे, पावो पद निर्बाना रे ।। 4 ।।

।।भजन राग कामोल।।

मनुष काहे को तूँ आया रे ।
जग में जिसने जन्म दिया है, तिसको नाहिं ध्याया रे ।।टेक ।।
मात गर्भ में उलटे थे जब, हरि से बोल बन्धाया रे ।। 1 ।।
बाहर निकसे ताहिं बिसारा, मोह लिया तुझ माया रे ।। 2 ।।
पाँच तत्व की देह देख के, निज स्वरूप भुलाया रे ।। 3 ।।
कहे ''टेऊँ'' हरि भजन बिना तूँ, यम के हाथ बिकाया रे ।।4 ।।

दोहा- गांठी होय सो हाथ कर, हाथ होय सो दे ।
आगे हाट न बाणियाँ, लेना है सो ले ।।

उपरोक्त भजनों की व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि, अरे जीव ! जो कुछ तुम्हारी गाँठ में बंधा हो, वह सब खोल कर हाथ में धर दो और हाथ में धरे हुए को प्रभु के नाम पर दान कर दो । क्योंकि तुम्हारे द्वारा दिया गया दान ही परलोक के मार्ग में तुम्हारी सहायता करेगा । वहां पर खरीददारी करने के लिये कोई भी दुकान नहीं है । इसलिये-

श्लोक - वखरु सो विहाइ, जो पए पुराणो न थिए,
वेचींदे विलायत में, ज़रो थिए ना जाइ ।
सा का हड़ हलाइ, आगहिं जहिंजी उबहीं ।।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 मई 2025

वर्ष 18 अंक 02

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर–474001 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751–4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751–4045144 पर अथवा व्हाट्स् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिबु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार–शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

सद्गुरु टेऊँराम चालीहा भजन

थलु : स्वामी टेऊँराम जो, चालीहो मनायूं।
चालीहो मनायू– वाधायूं वरायूं।
1. धन माता कृष्णा – पिता चेलाराम हो।
धन प्रेमी प्यारा – मिली गीत गायूं।।
2. ड़िनो मन्तर प्यारो – सत्नाम साक्षी।
जपे जाप तंहिंजो – भला भाग भायूं।
3. आहे पंथ प्यारो– सभ जो सहारो।
नालो प्रेम प्रकाश – सभ भ्रम मिटायूं।।
4. धाम सुहिणो सुंदर – सतगुरु बणायो।
नालो अमरापुर – सिरड़ो निवायूं।।
5. आहे ढोढो चटणी – प्रसाद प्यारो।
खाई प्रेम सां सभ – दुःख दर्द लायूं।।
6. सुन्दर रास रचाई – जोगीअ मौज मचाई।
टण्डे आदम वेही – वारियूं वसायूं।।
7. चालीहो व्रत रखनि जे – दुःख दूर थीन्दा।
गुरुदेव तिनिजूं – आशुं पुजायूं।।

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिबु), जयपुर

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	दर्शन से किया चालीहा व्रत पूर्ण, सांई टेऊँराम चालीसा पर विशेष	4–5
03.	बाबा टेऊँराम का पावन जन्म दिवस शनिवार	6–7
04.	सत्संग क्या है? सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज सत्संगामृत	8
05.	निडर व निर्भीक महापुरुष– सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महिमा	9
06.	युगपुरुष आचार्य 1008 सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज–जीवन परिचय	10–11
07.	प्रयागराज महाकुम्भ में पूज्य महाराजश्री के पावन श्रीमख से बरसा अमृतरस	12–13
08.	मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जन्मोत्सव सम्पन्न–समाचार	14
09.	जयपुर में सद्गुरु स्वामी हरिदासराम पार्क का उद्घाटन	15–16
10.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का चालीहा महोत्सव कैसे मनायें	17–18
11.	तपोनिष्ठ सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन जीवन की झलकियां	19–20
12.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महिमा भजन	20
13.	राम नाम की महिमा, जिसकी जैसी भावना – पावन प्रेरक प्रसंग	21–22
14.	बरसात के मौसम में स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण सुझाव	23
15.	इन्दौर वार्षिकोत्सव मेला–समाचार	24
16.	आचार्य सद्गुरु टेऊँराम चालीसा प्रारम्भ समाचार	25
17.	सांई टेऊँराम जन्मोत्सव–प्रकटोत्सव कैसे मनायें	26
18.	समाचार डायरी	27
19.	भजन (श्री हरकेश वधवा)	28
20.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	29
21.	व्रत – पर्व – उत्सव + सूचना,	29
22.	अमरापुर गमन	29
23.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	30

सद्गुरु टेऊँराम चालीहा अनुष्ठान पर विशेष

दर्शन से किया चालीहा व्रत पूर्ण

हरि भक्त के संग से, हरि भक्ती मिल जाय।
कह टेऊँ हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय।

संतों-महापुरुषों का इस धरा धाम पर अवतरण भी अनुपम-विलक्षण-दिव्यतम होता है, उनके आने का उद्देश्य-- मानव के मन को उस अविनाशी प्रभु परमात्मा की ओर मोड़ना है जिसके लिए जीव का इस अमोलक मानव देह में आना हुआ. महापुरुषों के मंगल प्राकट्य के इतिहास इस बात के प्रमाण हैं.

सिंध हिंद के महानतम संत शिरोमणि, महायोगी, युगपुरुष, सर्व उपमा योग्य, धन धन बाबा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है! **सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही 40 दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था. चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान शिव जी ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं. ऐसा आश्वासन (वरदान) पाकर माता कृष्णादेवी ने श्रद्धा भक्ति-भाव से 41 वें दिन उपवास पूरा किया. समय पाकर माता को तपस्या का फल मिला. और हम सबके कल्याणकारक ईश्वरांश मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इस धरा-धाम सिंध टंडा आदम के खंडू गांव में अवतरण लिया.**

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो. इसी श्रद्धा-प्रेम से आज समस्त संसार इस चालीस दिवसीय चालीहा व्रत उपासना पर्व को श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाते है और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठान पूर्वक सत्कार्य भक्तों द्वारा किये जाते है.

चालीहा का महात्मय बहुत पुराना है. भगवान श्री झूलेलाल चालीहा महोत्सव भी सर्व मनोरथ सिद्ध करने हेतु भक्तों द्वारा मनाया जाता है. साथ ही अनेक देवी-देवताओं के 'चालीसा' भी प्रसिद्ध हैं- **शिव चालीसा, हनुमान चालीसा, झूलेलाल चालीसा, दुर्गा चालीसा और साईं टेऊँराम चालीसा आदि.** चालीहा महोत्सव के अन्तर्गत इसका नित्य नियम से पाठ करने से मनइच्छित फल की प्राप्ति होती है.

सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह मर्मस्पर्शी प्रसंग, **"साईं टेऊँराम चालीहा व्रत उपासना"** तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी, इससे **'भक्त और भगवान की प्रगाढ़ता'** के बारे में पता चलता है.

卐 माता पदीबाई को दर्शन देना 卐

यह बात उस समय की है जब माता कृष्णादेवी को गुरुधाम सिधारे अभी एक महीना ही हुआ था कि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की प्यास लिए गौंसपुर के भाई मनाराम की धर्मपत्नी **'माता पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है'** और वह प्रभु परमात्मा- गुरुदेव के दिये अखण्ड नाम का सुमरण कर रही है, उसका संकल्प है कि जब तक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शन नहीं होंगे तब तक मैं कमरे से बाहर नहीं निकलूँगी और व्रत भी चलता रहेगा. बड़ा ही कठोर तप चल रहा था.ऐसा दृढ़ निश्चय करके ही माता पदी बाई ने चालीहे व्रत की समय-सीमा को पूरा किया. माता पदी बाई ने व्रत पूरा हो जाने पर कमरे से निकलने के लिए घर वालों व पास पड़ोस रिश्तेदारों पंचों के अनुनय विनय को भी अस्वीकार कर दिया. माता पदी बाई भक्ति-भाव मिश्रित मृदुल वाणी में पूर्ण आस्था से बोली कि मेरे हृदय में गुरुदेव के प्रति प्रेम भाव सच्चा है और मेरी गुरुनिष्ठा

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश
जहाँ तक हो सके तीनों अवस्थाओं बाल, जवानी, वृद्धावस्था में भक्ति करनी चाहिए। भक्ति के द्वारा ही मनुष्य परम पद अविनाशी देश को पा सकता है।

अटूट है तो मेरे घर **'सद्‌गुरु साईं टेऊँराम बाबा'** जरूर आएँगे जब तक स्वामी जी घर दर्शन देने नहीं आयेंगे तब तक मैं बाहर नहीं आऊँगी । मैं चिरकाल तक प्रतीक्षा करूंगी । जिस प्रकार माता शबरी को भगवान श्रीराम जी के दर्शनों की प्रतीक्षा (प्यास) थी, वैसे ही आज इस माता को भी दर्शनों की प्यास थी । दर्शन के बाद ही चालीसा व्रत पूर्ण करूंगी । यह मेरा दृंढ संकल्प है ।

गुरु महाराज जी माता के स्थान से बहुत दूर थे थक हारकर कंधकोट व गौंसपुर के पंचों ने टण्डो आदम पहुँचकर पूज्य सद्‌गुरु महाराज जी को सारी बात बताई. करुणानिधान, भक्तों की हर शुभ इच्छाओं को पूरी करने वाले अर्न्तयामी, सर्व ऋिद्धि-सिद्धि के मालिक, भक्तवत्सल आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने जब यह बात सुनी, तत्क्षण उठ खड़े हुए और बोले, चलो अभी चलते हैं माता पदीबाई के पास । जो इतना कष्ट उठाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति कर रही है. तो हम भी उस माता के दर्शन करेंगे.

देखें! श्री गुरुदेव भगवान की कैसी भक्त वत्सलता- निर्मानता! कहाँ माता का संकल्प था कि मैं सद्‌गुरु महाराज जी के दर्शन करके ही व्रत खोलूँगी और कहाँ पूर्ण महायोगी परम दयालु **सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** कह रहे हैं कि हम उस माता के दर्शन करेंगे. इसे कहते हैं **भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम !** भक्त की भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा!

श्री गुरुदेव भगवान का मंगल आगमन गौंसपुर में होते ही सर्वप्रथम माता पदी बाई के घर पहुंचकर दर्शन दिया । सद्‌गुरु महाराज जी का दिव्य दर्शन पाकर माता पदी कमरे से बाहर निकल कर सद्‌गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अति प्रसन्न मन से कोटि- कोटि वन्दन करती है. उनके नेत्रों से प्रेम विह्ल अश्रुधारा बहने लगती है, जैसे भगवान श्रीराम का दर्शन पाकर माता शबरी के प्रेमाश्रु निकले थे-वैसे ही माता की आंखों से सजल धारा बह रही थी । जब श्री गुरुदेव भगवान ने अपना कृपा भरा वरद् हस्त उनके ऊपर रखा और माता बहुत गदगद् और प्रसन्नचित्त हुई । इस प्रकार माता ने चालीहा अनुष्ठान पूरा किया ।

तत्पश्चात् यहीं पर **''श्री गुरुदेव भगवान''** जी के पावन सानिध्य में हवन-यज्ञ अनुष्ठान, पूजा-पाठ एवं भजन-सत्संग का भव्य आयोजन हुआ. वहां के सभी प्रेमी ऐसा अद्‌भुत दृश्य देखकर बड़े प्रसन्न हुए । 'इसे कहते हैं- भक्त और गुरु की अनन्त पराकाष्ठा । भक्त व भगवान का प्रेम । बोलो भक्त और भगवान की जय ।

सद्‌गुरु टेऊँराम का, चालीहा महोत्सव अभिराम ।
श्रद्धा भक्ति से पाठ कर, होवे पूर्ण काम ।।

-प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (मोनूराम जीं),
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

प्रेरक प्रसंग

एक चिकित्सक अमोघ चिकित्सा के लिए प्रख्यात थे। वे स्वयं भी निरोग रहते और असाध्य रोगियों तक को रोग मुक्त करते। दिन भर वे लकड़ी काटने का काम करते और जंगल में रहते थे। एक दिन किसी असाध्य रोग से पीड़ित एक श्रीमान उन्हें खोजते हुए जंगल में पहुँचे। व्यथा सुनकर उन्होंने वहीं एक महीने के लिए सेवन योग्य दवा दी और कहा इसे अपने माथे के पसीने में गीली करके प्रातः सायं खाया करना। पसीना निकालने में उस बड़ी मेहनत करनी पड़ती। इस आधार पर निठल्लापन दूर हुआ साथ ही रोग मुक्त होने का अवसर भी मिला।

वह श्रीमान बहुत दिन बाद चिकित्सक का उपकार जताने और कुछ भेंट देने फिर पहुंचे साथ ही उस औषधि का नाम बताने तथा बनाने का विधान समझाने का आग्रह किया, ताकि जरूरत पड़ने पर उसे स्वयं ही बना लिया करें।

चिकित्सक ने समझाया। औषधि तो सूखी घास भर थी पर उसका अनुपात पसीने से मिलाना था। कड़ी मेहनत ही वह दवा है जिससे सभी रोग दूर हो सकते है। आलसी को ही सब रोग घेरते है।

संकलित

सद्‌गुरु सर्वानन्द सन्देश मनुष्य जो कार्य प्रारम्भ करे उसे अवश्य पूर्ण करे।

सद्‌गुरु टेऊँराम चालीसा

बाबा टेऊँराम का पावन जन्म दिवस शनिवार

पावन शनिवार पर विशेष

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

शनिवार की महिमा न्यारी, जग में आप पधारे !
तेरी तपस्या के बल से हुए, शनि के वारे न्यारे !!
जो भी शनिवार को आवे, गुरु चरणों में शीश झुकावे !
उसकी मंशा पूरी, करते बाबा टेऊँराम !!

शनि ग्रह का नाम सुनते ही भयभीत हो जाते हैं हम सब ! शनि को अशुभ व दुःखदर्द देने वाला ग्रह मानते हैं! इसके प्रभाव से दुःख की घड़ी शनैः शनैः बीतती है (शनैचर अर्थात् धीरे-धीरे चलने वाला) मन विचलित हो उठता है ! गृह-क्लेश, दुःखदर्द, धन-पदार्थों आदि की दशा भी ठीक नहीं रहती ! इस ग्रह की छाया भी किसी को न लगे, ऐसी हम भगवान से सभी के लिए कामना करते हैं! वैसे भी कहा जाता है ! ग्रह किसी को दुःख नहीं देते है, हमारे कर्म ही हमें दुःख देते है इसलिए हमेशा शुभ व अच्छे कर्म करें! ऐसे ग्रहगोचर की दशा दूर करने के लिये भगवान योगेश्वर ने महायोगी सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के रूप में शनिवार के दिन इस पवित्र धरा पर अवतार लिया! जिससे शनिग्रह का भय किसी को न लगे ! जो कोई भक्त शनिवार के दिन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के दरबार (श्री अमरापुर दरबार) का दर्शन सच्चे मन से करता है तो बाबा उसके सब दुःखदर्द दूर कर देते हैं ! वह सदैव प्रसन्नचित्त होकर परम सुख को प्राप्त करता है ! मन में सच्चा प्रेम-भाव रखकर हर शनिवार को सद्गुरु टेऊँराम की दरबार पर ढोढा चटनी महाप्रसाद का भोग लगाना, सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप करना, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा व जन्म साखी का पाठ करना एवं बाबा के दिव्य स्वरूप का पावन दर्शन ! ये सभी शुभ कार्य करने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है! सच्चे मन से जो जैसी भावना लेकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दरबार पर जाता है बाबा उसकी हर मनोकामना पूरी कर देते हैं!

अची छन्छर डींहु सीस झुकाए,
सभु मन जूं मुरादूं आ पाए !
तहिंजा कारज थियनि,
गुरु सभु कुछ डियनि वरे वारो !
अचो प्रेमी हली,
कंदो सतगुरु भली डिब वारो !
आयो आयो आ छन्छर डिहाड़ो !!.........

मनोवांछित फल प्राप्ति शनिवार के पवित्र दिन हजारों श्रद्धालु भक्त आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के मुख्य दरबार "श्री अमरापुर स्थान, जयपुर" सहित देश विदेश के विभिन्न शहरों कस्बों में स्थित सैकड़ों सद्गुरु टेऊँराम दरबार प्रेम प्रकाश आश्रमों पर अपनी हाजिरी जरूर लगाते हैं ! भोरवेला से रात्रिपर्यन्त श्रद्धालु भक्त उमड़ पड़ते हैं ! सभी दरबारों में एक आध्यात्मिक भक्तिमय मेले जैसा माहौल होता है ! अद्भुत नजारे! कोई धूप-दीप, अगरबत्ती जला रहा है, तो कोई समाधि स्थल

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सम्बन्धियों व मित्रों के लिए व्यर्थ आँसू बहाते हैं।
प्रभु के विरह में गंगा जमुना बहानी चाहिए।

मंदिर में नामजप कर रहा है, तो कोई भक्त सत्नाम साक्षी मंत्रमाला का पवित्र जाप तो कोई बाबा का चालीसा पाठ करके बाबा को सश्रद्धा मनाने का मंगल प्रयास कर रहा है। सद्गुरु टेऊँराम बाबा की दरबार में, बाबा की पवित्र महिमा का गुणगान भजनों के माध्यम से चल ही रहा है! चहुँ ओर भक्तिमय वातावरण! भक्ति सरोवर में डूबे भक्तजन भूल जाते हैं अपनी सुध-बुध ! सभी का मन ''सद्गुरु टेऊँराम आराधना'' में दिखायी पड़ता है !

ऐसे ग्रहगोचर विघ्नहर्ता दुःखदर्द को दूर करने वाले हैं अवतार कोटि के महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ! ऐसे महायोगियों के अवतार लेने पर दिवस, महीना, तिथि, वर्ष, स्थान, देश, गाँव एवं वह भूमि श्री पवित्र व पावन हो जाती है साथ ही ये सभी पूजनीय बन जाते हैं। आज पूरे विश्व में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्मोत्सव वर्ष के सभी ''शनिवार'' को मनाया जाता है! वार्षिक महोत्सव में ''सद्गुरु टेऊँराम जयंती'', मासिक जन्मदिवस में ''सद्गुरु टेऊँराम चौथ'' और साप्ताहिक जन्मदिवस में हर शनिवार सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का अवतरण दिवस पूर्ण श्रद्धा भक्ति-भाव के साथ आनन्दोल्लास से मनाया जाता है!

शनिवार की पवित्र वेला में समूचे विश्व में प्रातःकालीन व सायंकालीन सद्गुरु टेऊँराम भक्ति संध्या, गुरु प्रार्थनाष्टक पाठ, सद्गुरु टेऊँराम महिमा गुणगान, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा पाठ, सत्नाम साक्षी महामंत्र माला का जाप, सद्गुरु टेऊँराम जन्मसाखी का पाठ, आरती एवं बाबा के मंदिर की मनमोहक सजावट कर पुष्पों से श्रृंगारित किया जाता है! साथ ही महाप्रसाद ढोढा चटनी का भोग लगाकर ''सद्गुरु टेऊँराम अवतरण दिवस शनिवार'' को बड़े श्रद्धा प्रेम व उत्साह के साथ मनाया जाता है!

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्म शनिवार के दिन हुआ! तभी शनिवार को वरदान प्राप्त हुआ! जो भी जिज्ञासु भक्त शनिवार के दिन पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान अथवा अपने शहर में स्थित सद्गुरु स्वामी टेऊँराम दरबार (प्रेम प्रकाश आश्रम) का दर्शन करेगा! वह अमरत्व प्राप्त करके ''शनि'' के प्रकोप से सदा बचा रहेगा एवं उस पर सदैव सद्गुरु टेऊँराम भगवान का आशीर्वाद बना रहेगा! श्री गुरुदेव भगवान के पावन श्री चरणों में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

प्रेमप्रकाशी संत श्री मोहनलाल जी (मोनूराम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सत्नाम साक्षी का अर्थ

परमात्मा सत्य है, साक्षी है, वह विभिन्न नाम से जाना जाता है ! आपके साथ है एवं आपको देख रहा है ! सूर्य, चंद्र, और परमात्मा के नाम को सत्य का भान करवाते है् ! यह सभी परमात्मा के नाम के साक्षी होते हैं !

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु। जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश। मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है। मृत्यु भी कई प्रकार की होती है। रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है और अभिमान भी मृत्यु है।

सत्संग क्या है ?

सद्गुरु सर्वानंद जी महाराज सत्संगामृत

सत् का संग करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है ! केवल प्रवचन देने या भाषण देने को सत्संग नहीं कहते ! सत् के अर्थ को बतलाते हुए स्वामीजी कहने लगे कि चोरी न करना, पक्षपात न करना, विश्वासघात न करना, अन्याय न करना, अत्याचार न करना, शराब (मदिरा) न पीना, मांस, मछली, अंडे न खाना, दहेज न लेना, झूठी गवाही न देना, सत्य बोलना, झूठ न बोलना, कड़वा न बोलना, निन्दा न करना, चुगली न मारना, क्रोध न करना, लोभ, मोह, अहंकार न करना, सुख दुख को सहन करना, घर के बड़ों की आज्ञा मानना, माता-पिता, सास-ससुर, पति की सेवा करना, दया करना, कर्तृतव्य का पालन करना, बड़ों का सम्मान करना, शिकायतें सुनना, ईर्ष्या न करना, अवगुण (दोष) न देखना, सोच विचार कर बोलना, छल-कपट न करना, सत्य का व्यवहार करना, किसी की धरोहर हड़प न करना, चापलूसी (चाटूकारी) न करना, हंसी मजाक (ठठोली) न करना, धोखा न करना, मादक (नशेवाले) पदार्थ न खाना न पीना, अपनी बड़ाई न करना, सन्तोष करना, भ्रम संशय न डालना, किसी को भयभीत न करना, वाणी में मिलवाट न करना इत्यादि सब सत्य के अंग हैं ! अंगों सहित सत् को धारण करना **''सत्संग''** कहलाता है !

सभी प्रेमी महापुरुषों की वाणी को ध्यान से पढ़ें

!!श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

"जिस व्यक्ति की खुद पर पूरी कमांड होती है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा उसकी डिमांड भी पूरी होती है"।

दूसरों के बीच दरार डालकर खुद अच्छा होने का दिखावा करने वाले की जीवन में ऐसा समय आ जाता है जिसके बाद जिंदगी भर उसे अकेलेपन का सामना करना पड़ता है... इसलिए, आपको ऐसा महापाप कभी भूल कर भी नहीं करना चाहिए।।।

कहते हैं कि यह सच है कि रूठना और मनाना हर रिश्ते का अहम हिस्सा है और रिश्तों के ज़िंदा रहने का सबूत भी, फिर भी...

ध्यान रहे कि किसी भी रिश्ते में, अगर नाराज़गी या गुस्सा लम्बी ख़ामोशी में तब्दील हो जाए, तो समझ लेना कि वो रिश्ता आप सदा के लिए खो चुके हो।।।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अपने स्वास भगवत भजन में व शरीर परोपकार व धर्म में लगा लो। क्योंकि काल के द्वारा वैसे ही एक न एक दिन मारे जाओगे।

!! निडर व निर्भीक महापुरुष !!

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महिमा
पावन प्रसंग

सिन्धी भाषा को लुप्त होता देखकर स्वामी हरिदासराम जी महाराज सदैव सबको उपदेश दिया करते थे कि सिन्धी हमारी मातृभाषा है। आपस मे हमेशा सिन्धी में बोले। अपने बच्चों से भी सिन्धी में बात करे। सिन्धी समाज का गौरव बढ़ाए।

ऐसे ही एक बार ग्वालियर के 'सिन्धु आदर्श बाल मंदिर' में सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज को विद्यालय में आने के लिए निवेदन किया गया। जिससे बालकों को अपने समाज के संतों-महापुरुषों के बारे जानकारी मिले और उनके प्रति श्रद्धा-विश्वास का संस्कार जागे। उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो सके। स्वामी जी ने उनका निवेदन सहर्ष स्वीकार किया।

अगले दिन स्वामी जी कुछ संतों के साथ वहाँ पधारे। स्वामी जी का यथा योग्य स्वागत सत्कार किया गया। फिर संस्थापक ने विद्यालय द्वारा क्या-क्या कार्य किये जाते है। वह सब सविस्तार वर्णन किया। स्वामी जी सारी बात ध्यान से सुन रहे थे।

अब स्वामी जी से दो आशीर्वचन की प्रार्थना की गयी। स्वामी जी ने गंभीर वाणी में पूछा..? विद्यालय में कितने बच्चे सिन्धी हैं..? अध्यापकों ने कहा-लगभग ६०। फिर स्वामी जी ने कहा- जब बच्चे सिन्धी हैं तो फिर आपने पूरा भाषण हिन्दी में क्यूँ दिया.. ? जब आप ही ''सिन्धी भाषा'' को महत्व नहीं दोगे तो फिर बच्चों को क्या संस्कार दोगे..? कैसे हमारी सिंधी बोली बचेगी..?

ऐसा सुनकर पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। कोई भी जवाब नहीं दे सका। फिर स्वामी जी ने कहा- हम सब सिन्धी हैं। फिर भी सिंधी नही बोलते। स्वामी जी ने पुनः सभी से पूछा- हमारे घरों में कितने माँ-बाप ऐसे हैं, जो बच्चों से सिन्धी में बात करते हैं..? सब माँ-बाप बच्चों की ओर निहारने लगे। सभी चुपचाप व शान्त हो गए।

एक-दो बच्चों को खड़ा करके पूछा- बेटा। हमारे इष्टदेव भगवान कौन है..? कोई जवाब नहीं दे पाया। फिर अध्यापकों की ओर देखने लगे। सब चुप थे। स्वामी जी ने खुद ही जवाब दिया। भगवान श्री झूलेलाल।

सभी आपस में बात करने लगे। लेकिन स्वामी जी ने सभी के मन की बात जान ली। हमारा आदर-सम्मान ही सब कुछ नही। जो समाज की बुराइयों को छुपा सके। जो सच है वो कहने में भय कैसा..?

स्वामी जी ने कहा-हमनें अपनी मिट्टी की खुशबू अपने बच्चों में नहीं भरी। अपनी सिंधी मातृ भाषा खो दी।

स्वामी जी ने निर्भय व निडर होकर सारी सच्चाई मंच पर बयान कर दी। स्वामी जी अपनी सिन्धी भाषा को कायम रखना चाहते थे और कभी किसी से भयभीत नही होते थे। जो सच्चाई होती थी वो सबके सामने बोल देते थे।

धन्य-धन्य है-ऐसे निड़र, निर्भीक संत-महापुरुष..। जो सभी को जगाने का प्रयास करते है।

पूज्य 'महाराज श्री' के 'श्री चरणों' हमारा कोटि कोटि वन्दन..

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (मोनूराम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश अपने-अपने धर्म में रहना चाहिये। अपना धर्म ही सुखदाई है।

युगपुरुष आचार्य श्री 1008 सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

सद्‌गुरु टेऊँराम पुण्य तिथि 1 जून 2025 पर विशेष

आचार्य श्री सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्म सिन्ध प्रदेश, हैदराबाद जिले के खण्डू गाँव विक्रम सम्वत् १९४४, सिन्धी चार तारीख, आषाढ़ शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, शनिवार का दिन, प्रातः ५ बजे फूलवंशी, क्षत्रिय कुल में हुआ था ! जैसे प्रभु श्री राम का जन्म सरियु नदी, भगवान श्री कृष्ण यमुना नदी के तट पर हुआ वैसे ही स्वामी जी का जन्म भी "सिन्धु नदी" के पावन तट पर हुआ था !

स्वामी जी की **"माता श्री" का नाम कृष्णा देवी और "पिता श्री" का नाम श्री चेलाराम जी था !** माता कृष्णा देवी स्वामी जी को गोद में लेकर प्रतिदिन मीठे स्वर से **"शिवोऽहम्"** व **"राम नाम"** की लोरी सुनाती थी ! पण्डित जयराम जी ने स्वामी जी के ग्रह नक्षत्र देखकर भविष्यवाणी की कि **'यह बालक होनहार होगा तथा अवतार के रूप में कहलायेगा**' और फिर स्वामी का नाम **"टेऊँराम"**रखा !

पिता चेलाराम जी ने ४-६ वर्ष की आयु में स्वामी जी को पाठशाला पढ़ने के लिए भेजा ! किन्तु पढ़ाई में मन नही लगा! तब स्वामी जी ने केवल एक **"ॐ"** अक्षर ही कण्ठस्थ किया ! स्वामी जी १३-१४ वर्ष के हुए ! तब दादा साईं आसूराम जी महाराज से नाम-दीक्षा प्राप्त कर भगवत भजन में लग गए !

अवतारी महापुरुष सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपना पंथ, ग्रन्थ, मंत्र एवं थाम अपने प्रचण्ड तप भक्ति ज्ञान के बल से बनाया !

- **पंथ : श्री प्रेम प्रकाश पंथ**
- **मंत्र : सतनाम साक्षी**

जीवन परिचय

- **ग्रन्थ : श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**
- **धाम : श्री अमरापुर धाम**

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सर्वप्रथम सिंध प्रदेश में रेत के रीले पर टण्डे आदम 'अमरापुर दरबार' का निर्माण किया ! जिससे स्वामी जी को **डिब वाले सांई के नाम** से भी जाना जाता था !

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को सर्वप्रथम **'भगवान श्री लक्ष्मीनारायण'** के दर्शन हुए ! इसीलिए सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में इष्टदेव **'भगवान श्री लक्ष्मीनारायण'** की प्रतिमा विराजमान की गई है! सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के द्वितीय पीठाधीश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने देश-विभाजन के पश्चात जयपुर में **"श्री अमरापुर दरबार"** का निर्माण करवाया ! जो आज श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय है !

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में टण्डेआदम व खंडू गांव की रज (मिट्टी) दर्शनार्थ रखी गयी हैं ! मंदिर के गर्भगृह में सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानंद जी का समाधि स्थल बना हुआ है ! जहाँ हजारों प्रेमी नित्य-नियम से दर्शन, सुमरन का लाभ लेते हैं ! सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का साप्ताहिक जन्मदिन-शनिवार, **मासिक जन्म चौथ** एवं आषाढ़ मास में **सद्‌गुरु टेऊँराम जन्म जयंती** पूरे विश्व भर में बड़े श्रद्धा भक्ति भाव से मनाया जाती है ! स्वामी जी का मुख्य प्रसाद ढोढ़ा-चटनी हैं ! जो कि सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में वितरण किया जाता हैं ! सतगुरु महाराज जी की वाणी को **"श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ"** में संजोया गया है ! जो सभी वेद शास्त्रों का सार तत्व है ! सतगुरु महाराज जी द्वारा

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रतिदिन प्रात: काल को उठकर भगवान के आभार मानें कि उसने आपको आज नया जन्म दिया है। मन में संकल्प करें कि आज कोई भी पाप-कर्म नहीं करूँगा और शुभ कर्म ही करूँगा।

रचित अनुभव की वाणी सोलह शिक्षाएँ भी है ! जिसमें पूरे वेद शास्त्रों का ज्ञान समाया हुआ है ! इसी प्रकार सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा **''ब्रह्मदर्शनी''** की रचना भी की गई ! जिसमें पूरा ब्रह्मज्ञान समाया हुआ है ! जिसका नित्य नियम से पाठ करना चाहिए ! सतगुरु महाराज जी के **''शांति के दोहे''** जिसका पाठ करने से शांति मिलती है !

वर्तमान में सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के देश-विदेश में लगभग १५० प्रेम प्रकाश आश्रम बने हुए हैं ! जहां नित्य नियम भजन सत्संग, आरती, प्रार्थना होती है ! श्री अमरापुर स्थान जयपुर में **''गौशाला''** बनी हुई हैं ! जहाँ नित्यप्रति गौ माता की सेवा होती है ! इसी प्रकार जयपुर के मानसरोवर में विशाल **''सद्गुरु टेऊँराम गौशाला''** बनी हुई है ! जिसमे लगभग २५० गौमाता की सेवा होती है !

स्वामी जी के नाम से रामेश्वर धाम एवं उज्जैन में स्वामी टेऊँराम घाट भी बने हुए ! सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के नाम से अनेक स्थानों पर सद्गुरु टेऊँराम चौक, मार्ग, सर्किल, पथ, गौशाला, विद्यालय, बाग बगीचें एवं सेवा समितियां आदि बनी हुई है !

महायोगी युगपुरुष आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ५५ वर्ष की आयु तक धराधाम पर रहें ! फिर अपनी लीला समेट कर सिंधी चार तारीख, शनिवार, पुरुषोत्तम मास, सम्वत् १९९९ को पंच भौतिक शरीर का त्याग कर पारब्रह्म की ज्योति में समाहित हो गये। महापुरुषों के श्री चरणों में कोटि कोटि वंदन...

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थावली

- **श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ (795 पृष्ठीय आध्यात्मिक महाग्रंथ)**
- **'श्री प्रेम प्रकाश दोहावली (1375 दोहे)**
- **श्री ब्रह्मदर्शनी (250 ब्रह्म पद)**
- **श्री कवितावली-छन्दावली (पद-छन्द)**
- **श्री अमरापुर वाणी (हिन्दी-सिन्धी भजन संग्रह)**

सलोक माला (१०८ सलोक), सोलह शिक्षाएँ, शान्ति के दोहे, अमर कथा आदि अनुभवी वाणी का अमूल्य खजाना **''पूज्य महाराज श्री''** द्वारा रचित है ! जो कि श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में उपलब्ध हैं !

ऐसे युगपुरुष-युगदृष्टा कर्मयोगी को हमारा शत्-शत् नमन्

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (मोनूराम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में मुख्य कार्यक्रम
श्री अमरापुर दरबार जयपुर एवं श्री प्रेम प्रकाश आश्रम अजमेर में

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 139वाँ जन्म महोत्सव

गुरूवार 26 जून से सोमवार 30 जून 2025 तक

बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूम धाम से मनाया जायेगा

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

मरता तो शरीर है आत्मा नहीं। वह तो स्वयं ज्ञान स्वरूप है।

प्रयागराज महाकुम्भ 2025

कहे टेऊँ काहीं ऐसा मेला नाहीं
देखा मेला कुम्भ का-गंगा के किनारे
दिव्य रूप दर्शन-गुरां के निहारे

कुम्भ में छलकी अमृत की बून्दे

परम पूज्य महाराजश्री के श्रीमुख से बरसा अमृत रस

11 जनवरी 2025 सायंकालीन सत्संग

बोलो सनातन धर्म की जय, श्री रामकृष्ण भगवान की जय, श्री शंकर भगवान की जय, श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की जय, जगदम्बे मैया की जय, सद्गुरु टेऊँराम महाराज की जय, सद्गुरु सर्वानन्द महाराज की जय, सद्गुरु शान्तिप्रकाश महाराज की जय, सद्गुरु हरिदासराम महाराज की जय, स्वामी बसंतराम महाराज की जय, सर्व सन्तन की जय, प्रेमप्रकाश मण्डल की जय, अमरापुर दरबार की जय, गंगा मैया की जय, यमुना मैया की जय, सरस्वति मैया की जय, प्रयागराज धाम की जय,

श्री राम जय राम जय जय राम श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम श्री राम जय राम जय जय
राम श्री राम जय राम जय जय राम

रख्यो जहिं नातो सामी सत्पुरुषनि सां
लंघे माया मोह खां पूरण पद पातो
चीटी ऐं कुंचर में साहिब सुञातो
वाए ना वातो रहे निज गुम ध्यान में
पारस में और संत में बड़ो अंतरो जान
वह लोहा कंचन करे यह कर ले आप समान
सम संतोषी परम विचारी, सम संतोषी ब्रह्म विचारी
निष्कामी निर्माण उदारी, निरपक्ष धर्म उदारा प्रीतम प्यारा,
प्रेम मंदिर में प्रेमप्रकाशी, साधु रहन सचारा प्रीतम प्यारा,
प्रेम मंदिर में प्रेम प्रकाशी
रहणी कहणी जिनजी सुहिणी, बोलन वाणी था मनमोहिणी.
आहिन भजन भंडारा प्रीतम प्यारा
ज्ञान ध्यान गुरु शब्द सुणाए, राम रंग सत्संग मिलाए,
मेटिन भरम अंधारा, प्रीतम प्यारा
प्रेम मंदिर में प्रेम प्रकाशी, धरम करम ऐं नीति विचारिनि,
हरि भक्तन जी कथा उच्चारिनि,
प्रेम करिनि परचारा प्रीतम प्यारा,
प्रेम मंदर में प्रेम प्रकाशी, प्रेम मंदिर में प्रेमप्रकाशी
बसंत तिन जो सत्संग करियो, वचन सुणी से चित में धरियो,
पायो मोक्ष दवारा प्रीतम प्यारा,
प्रेम मंदर में प्रेम प्रकाशी, प्रेम मंदिर में प्रेमप्रकाशी
साधु रहनि सचारा, प्रीतम प्यारा,
प्रेम मंदर में प्रेम प्रकाशी, प्रेम मंदिर में प्रेमप्रकाशी

प्रेम से बोलो सतनाम साखी, सतनाम साखी, तो महाकुंभ के इस पावन पर्व पर गंगा जी के किनारे पर गुरु महाराज जी की पवित्र छावनी और यहां पर बैठे हुए श्रद्धालुओं का बड़ा सौभाग्य है, आजकल यात्रा करना मुश्किल उसमें भी इस शीत काल में और ना रिजर्वेशन प्राप्त है ना सुविधाएं प्राप्त हैं, फिर भी यहां पर आकर जो पहुंचे हैं वह बड़े भाग्यशाली

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश अपने गुरू में शिष्य की प्रीति, प्रेम, श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए।

हैं, तो आज शनिवार का भी परम पावन दिन है सदगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी के अवतार धारण करने का दिन और महा प्रयाण का दिन शनिवार, साथ ही साथ हमारे प्रेम प्रकाश मंडल के बहुत वरिष्ठ महापुरुष पूजनीय स्वामी बसंत राम महाराज जी की १२३ वां जन्मदिन यहां पर मनाया जा रहा है, तो गुरु महाराज जी की संगत उन्होंने बचपन से ही की, जैसा कि स्वामी जी सत्संग में बताते हैं अपने पिता के साथ आकर के सत्संग में सम्मिलित होते थे, गुरुदेव की वाणी सुनके बचपन से ही उनकी शरण उन्होंने ले ली, आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जब ब्रह्मलीन हुए तो जो वरिष्ठ संत महापुरुष वहां पर थे उनमें पूजनीय स्वामी बसंत राम जी महाराज, पूजनीय स्वामी माधवदास जी महाराज, स्वामी चंदन राम जी महाराज, सभी वहां उपस्थित थे, सतगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज तब हरिद्वार ऋषिकेश में विराज रहे थे, उनको सूचना पहुंची उसके बाद वह वहां पर आकर के पहुंचे, टण्डा आदम, लेकिन ये वरिष्ठ संत उस समय वहां उपस्थित थे और गुरु महाराज जी की चरित्र लीलाओं का गान करके सिन्ध से जब यहां आए भारत विभाजन के पश्चात, तो पहले पहले हरिद्वार में उसके बाद सब संत महापुरुषों ने गुरु महाराज जी के नाम के प्रचार के लिए अलग-अलग शहरों में जाकर के गुरु महाराज जी के सुंदर मंदिरों का निर्माण किया, उद्देश्य था गुरु भक्ति का प्रचार और वेदांत के वो अत्यंत मर्मज्ञ थे, उनकी वाणी भी प्रचुर मात्रा में लिखी हुई है, दोहावली, श्लोकावली, भजनावली साथ ही श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की जब एक गुरु महाराज जी संत महापुरुष मिलकर के तैयारी कर रहे थे, उसमें भी उनकी प्रमुख भूमिका थी, जो प्रेम प्रकाश ग्रंथ सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की अमर वाणी प्रकाशित हुई उनमें वह अग्रणी भाग लेने वाले थे, उस रचना को संवारने में एकत्रित करके सही क्रम से लिखने में उन्होंने गुरु महाराज जी के साथ और संतों के साथ मिलकर बहुत बड़ा योगदान दिया, तो उन संत महापुरुषों का आज १२३ वां जन्मदिन है, यह भजन भी उनकी वाणी का बना हुआ है कि

संत महापुरुष सम संतोषी सदा विचारी,

अपने अंतर में विचार शक्ति को जगा के समता रखते हैं और संतोष रखते हैं, जो कुछ भी प्राप्त हो जाए जैसी भी जीवन में परिस्थिति बन जाए उसमें सदा संतुष्ट रहना यह संत महापुरुषों के जीवन का विशेष गुण है, तो उन गुरु महाराज जी ने संतों की महिमा में भजन में फरमाया है-

सच ही देवहिं सच ही लेवहिं, सच से प्रीति सच ही सेवहिं, समदम आदिक समदम आदिक षट गुणधारी, देखा जग में संत उदारी,
अपने सिर बहु दुख सहारहि सर्व जीवन के कष्ट निवारहिं, स्वारथ बिन से पर उपकारी, देखा जग में संत उदारी अति कृपालु कृपा करहिं, जन्म मरण के दुख को हरहिं, माता पिता से अति हितकारी, देखा जग में संत उदारी
कहे टेऊँ से ब्रह्मज्ञानी, हरदम आतम अंतरध्यानी,
तिन पर जाऊं मैं बलिहारी, देखा जग में संत उदारी,
सार ग्राही, परम विचारी, देखा जग में संत उदारी,

तो सत्य से उनकी प्रीति है, सच ही देवहिं सच ही लेवहिं, सत्य परमात्मा और धर्म का रूप है,

धर्म न दूसर सत्य समाना

उस सत्य का आश्रय लेके सत्य ईश्वर की शरण लेके सत्य को उन्होंने प्राप्त किया, अपने हृदय के अंदर सदगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी की परम कृपा प्राप्त हुई और अपना पूरा जीवन उनके नाम के प्रचार में, गुरु भक्ति के प्रचार में लगाकर और अंत में भी नाम का स्मरण करते करते प्राण का त्याग उन्होंने किया,

अंत काले च मामेव स्मरन्मुक्तवा कलेवरम्

भगवान के अमृतमयी वचन हैं कि मेरा स्मरण करते करते जो इस कलेवर शरीर का त्याग करता है वह मुझे ही प्राप्त करता है, तो ऐसे महापुरुषों का आज पावन जन्मदिन है, शनिवार का भी परम पावन दिन है, गुरु महाराज जी की पावन कृपा सब पर रहे प्रार्थना करें,

तुम्ही सतगुरु तुम पित माता, तुम ही हरिहर तुम ही विधाता,
हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामि।
जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी.....

मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 96वां जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

जयपुर। सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का ९६वां जन्मोत्सव बड़ें ही हर्षोल्लास के साथ श्री अमरापुर स्थान जयपुर एवं अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर मनाया गया । मुख्य कार्यक्रम जयपुर में श्री अमरापुर स्थान पर सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर श्रीमद् भागवत गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के पाठों का भोग पारायण हुआ । प्रातः काल की वेला में प्रातः ७ से ११ बजे तक नित्य नियम प्रार्थना, संत महापुरुषों का भजन सत्संग, जिसमे स्वामी मनोहरलाल जी, संत मोनूराम जी आदि संतो ने फिर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की प्रवचन कैसेट चलाई गई! उत्सव के तहत रखे गए पंच दिवसीय पाठो के भोग पारायण, भोग साहब के पश्चात विशाल आम भंडारे का आयोजन किया गया । जिसमे हजारों भक्तो ने भोजन प्रसादी ग्रहण की !!

प्रेम प्रकाश मंडल के चतुर्थ पीठाधीश्वर श्री सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज मर्यादा की मूरत थे, सादगी, निर्भिकता, समय के पाबंद आदि गुण उनमें विद्यमान थे ! उनके ९६वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में विशेष सेवा के प्रकल्प आयोजित किये गये ।

इस पंच दिवसीय उत्सव के उपलक्ष में अनेकों सेवा कार्य किये गये । जिनमें परिंदा पात्र वितरण (पक्षियों के लिये जलपात्र), गौशाला में गो सेवा घास फल गुड़ आदि खिलाए गए एवं समापन के तहत श्री अमरापुरा स्थान के बाहर निरंतर चल रहे अन्न क्षेत्र पर पुलाव प्रसाद एवं शीतल जल के साथ छाछ, एवं मिष्ठान वितरित किया गया । संतो ने गुरु महाराज जी के जन्मोत्सव की सभी भक्तो को अनन्त अनन्त बधाईयां दी !!

इसी प्रकार अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी जन्मोत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया गया । विभिन्न सेवा-प्रकल्प सभी स्थानों पर किये गये । जिसमें अन्नक्षेत्र-शर्बत-जल-छाछ वितरण सेवा, गौसेवा एवं अन्य सेवाकार्य किये गये ।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

माया की नींद से जाग्रत होकर भगवान को याद करें,
जिसने आपको मानव जीवन का स्वर्ण अवसर दिया है ।

जयपुर के मानसरोवर SFS में स्वामी हरिदासराम पार्क का हुआ उद्घाटन

प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने किया पार्क का वर्चुअल उद्घाटन

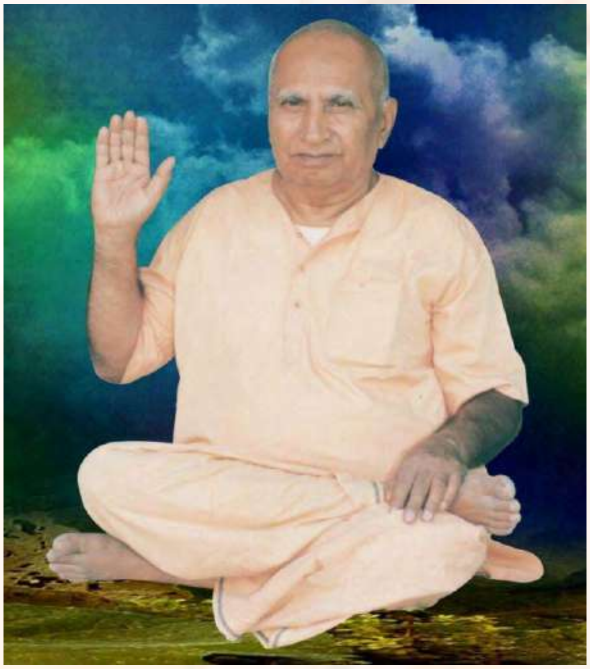

जयपुर। प्रेम प्रकाश मंडलाचार्य आचार्य सद्गुरु स्वामी सदगुरु टेऊँराम जी महाराज की फुलवारी के चतुर्थ पीठाधीश्वर मर्यादामूर्ति सतगुरु स्वामी हरिदास राम जी महाराज के ९६ वे पावन जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर रविवार ११ मई को **SFS** सेक्टर ४ अग्रवाल फार्म के समीप नव निर्मित **''स्वामी हरिदासराम पार्क''** का वर्चुअली उद्घाटन ११ मई २०२५ को दोपहर ११.११ मिनट पर वर्तमान प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी द्वारा किया गया! उद्घाटन के पुनीत अवसर पर पूज्य संत श्री मोनूराम जी महाराज, उप महापौर पुनीत कर्णावत द्वारा विधिवत पूजा अर्चना कर शिलान्यास पट्टी का अनावरण कर आम जन को सुंदर स्वामी हरिदासराम उद्यान समर्पित किया गया । पूज्य संत श्री मोनूराम जी ने बताया कि सुंदर नव निर्मित स्वामी हरिदासराम उद्यान में भिन्न-भिन्न प्रकार के सुगंधित पुष्पों के पौधों के साथ साथ अनेक प्रकार के छायादार, फलदार वृक्षों का रोपण किया गया है, साथ ही साथ उद्यान में कई प्रकार के झूले एवं व्यायाम के साधन भी लगाए गए है, जिससे उद्यान की सुंदरता में चार चांद लग गए हैं। उप महापौर पुनीत कर्णावत जी ने बताया कि श्री प्रेम प्रकाश मंडल सेवा के क्षेत्र में सदैव अग्रणीय है , श्री अमरापुर स्थान जयपुर के बाहर निरंतर चल रहे अन्न क्षेत्र मानव सेवा का सबसे बड़ा उदाहरण है। प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से रात्रि ८ बजे तक चलने वाले अन्न क्षेत्र में सर्व धर्म समाज के हजारों लोग प्रसादी पाते है, साथ ही मोक्ष वाहन सेवा भी प्रशंसनीय सेवा कार्य है ! उद्घाटन समारोह में संत मंडल के साथ उप महापौर पुनीत कर्णावत, वार्ड ८४ के पार्षद चेयरमैन अभय पुरोहित, वार्ड ७५ की पार्षद चेयरमैन भारती लाखयानी, वार्ड ८२ के पार्षद मनोज तेजवानी, समिति के अध्यक्ष ललित चांदगोठिया, सचिव डॉ.राजेश जैन, पूज्य पंचायत **SFS** के अध्यक्ष नरेश माखीजा, सचिव के.एम.रामानानी, जवाहर नगर के पार्षद महेश कलवानी, पूर्व पार्षद मुकेश लखयानी, दादा सुंदर ठाकुर सहित आदि वरिष्ठ जन उपस्थिति हुए। समिति के द्वारा संतो का माला एवं पखर पहनाकर आशीर्वाद लिया गया ! संतो द्वारा उद्यान की सेवा में सहयोग करने वाले सभी महानुभावों को पखर प्रसाद दे कर सेवा के क्षेत्र में सदैव इसी प्रकार कार्य करने का आशीर्वाद दिया गया।

इस समारोह में संत नवीन जी, संत हरीश, बी. डी. टेकवानी, कुमार चंदनानी, राजकुमार संगतानी, हेमंत कुमार खटवानी, कुमार विधानी, किशन, देव वाधवानी, ईश्वर वाधवा, मुकेश लखयानी, मुरली जेठानी, मुरली, संदीप पारवानी, प्रदीप मालिक , दीन दयाल, कालू, ऋषि ओम प्रकाश, अविनाश, पुनीत ,भरत, ऋषि आदि संत भक्तगण उपस्थित रहे !!

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

अहंकार को समाप्त किये बिना शान्ति सम्भव नहीं।

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

बिना गुरु की भक्ति के आत्म–ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।
ईश्वर से भी गुरु का महत्त्व बड़ा है ।

ॐ श्री सतनाम साक्षी

सदगुरू टेऊँराम चालीहा महोत्सव

21 मई 2025 (बुधवार) से 30 जून 2025 (सोमवार) तक

सद्गुरु टेऊँराम चालीहा व्रत अनुष्ठान के अन्तर्गत नियम एवम निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें !

जो भी प्रेमी ''चालीहा साहब'' प्रारंभ करें, उन्हें 21 मई (बुधवार) सुबह 6 बजे ''श्री अमरापुर दरबार'' पर पूजा में आना जरूरी है ! वहां सभी को रोली मोली (तिलक,धागा) बांधकर चालीहा साहब प्रारम्भ कराया जायेगा !!

1. चालीस दिन सभी गुरु भक्तों को श्री अमरापुर दरबार या घर पर ''सद्गुरु टेऊँराम चालीसा'' का पाठ... एवं 40 मिनट नामजप करना जरूरी हैं !
2. घर में ''सदगुरु टेऊँराम जी महाराज'' की मूर्ति आसन पर विराजमान करके प्रतिदिन चालीसा का पाठ एवं दोनों समय आरती करना आवश्यक हैं !
3. चालीस दिन प्रातः और रात्रिकालीन ''सतनाम साक्षी महामंत्र'' का 108 बार, 9 मालाओं का जप अनुष्ठान करना हैं !
4. शनिवार व सदगुरु टेऊँराम चौथ पर व्रत रखना हैं ! भोजन एक समय ही खाना हैं ! और श्री गुरु दरबार पर ''ढ़ोढ़ा-चटणी का भोग'' प्रसाद चढ़ाना हैं !
   अगर सहजता से सम्भव हो सके तो एक समय भोजन खाकर 40 दिन ''व्रत-उपवास'' भी रख सकते है !
5. चालीस दिनों तक ''माँस-मछली-अण्ड़ा-शराब-जुआ'' आदि व्यसनों से दूर रहना हैं 6. 30 जून, 2025 ''सद्गुरु टेऊँराम जयंती'' पर सभी भक्तों को अपने घर पर अखण्ड ज्योत जलानी है !
7. 30 जून 2025 ''सद्गुरु टेऊँराम अवतरण दिवस'' पर श्री अमरापुर दरबार (मंदिर) में प्रसाद चढ़ाकर और तुलसी पत्र खाकर, अखण्ड ज्योत का दर्शन कर चालीहा व्रत की पूर्णाहुति करनी हैं !

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश अब सारा व्यवहार फैशन का हो गया है। फैशन से देश फना (बर्बाद) हो गया है।

आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी का चालिया 21 मई से 30 जून तक प्रारंभ हो रहा है।

ये 40 दिन हम सभी प्रेमप्रकाशियों के लिए सबसे शुभ, पवित्र है। आइए सभी कुछ अच्छे कार्य करके इन दिनों को सार्थक बनाएं।

1. हमें प्रतिदिन सुबह 4 बजे उठकर नाम जाप करना चाहिए।
2. ध्यान के लिए बैठें,
3. प्राणायाम और योग करें.
4. सुबह-सवेरे टहलने जाएं और व्यायाम करें।
5. हम जिन सभी को जानते हैं उनके प्रति मुस्कुराहट व्यक्त करें और उन्हें शुभकामनाएं दें।
6. तुलसी और अन्य पौधों को जल दें,
7. सूर्य देव को जल चढ़ाएं और परिक्रमा करें।
8. मंदिर में बैठो और साईं के लिए भजन गाओ.
9. साईं को भोजन और जल अर्पित करें और फिर हम भोजन करें।
10. किसी जरूरतमंद व्यक्ति की मदद करें.
11. अनाज और किराने का सामान खरीदें और गरीबों को दें।
12. किसी भूखे भिखारी को भोजन कराएं।
13. पक्षियों के लिए पानी और कुछ दाने रखें।
14. गाय और कुत्ते को रोटी खिलाएं।
15. किसी विद्यार्थी की फीस भरने में मदद करें।
16. सड़कों पर फूल बेच रहे छोटे बच्चों से फूल खरीदें।
17. किसी अनाथालय में जाकर मदद करें.
18. किसी वृद्धाश्रम जाएं और उनके साथ कुछ समय बिताएं।
19. अपने सेवक को अपना कार्य करने में सहायता करें।
20. राहगीरों को लस्सी या पानी बांटें, क्योंकि गर्मी बहुत है।
21. प्रतिदिन दरबार साहब के दर्शन करें।
22. मंदिर में सेवा करें।
23. पवित्र लोगों के लिये सेवा करो।
24. श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ से कुछ पन्ने पढ़ें,
25. प्रतिदिन श्री टेऊँराम चालीसा का पाठ करें।
26. प्रतिदिन 11-21 माला जाप करें।
27. नित्य सतगुरु की आरती करो।
28. कुछ घंटों के लिए मौन व्रत रखें।
29. कुछ दिन उपवास करें।
30. सात्विक भोजन ही करें।
31. प्रतिदिन एक या दो बार भोजन करें, हर समय खाते नहीं रहे।
32. 40 दिनों तक फिल्में नहीं देखना.
33. अपने दादा-दादी के साथ कुछ समय बिताएं।
34. उनके लिए किताब पढ़ें या भजन गाएं।
35. रात को उनके पैरों की मालिश करें.
36. सतगुरु के जीवन इतिहास के कुछ पन्ने पढ़ें।
37. कोशिश करो कि किसी पर गुस्सा न हो,
38. हर किसी से नम्रता और दयालुता से बात करें,
39. सोने से पहले प्रार्थना करें और अद्भुत दिन के लिए भगवान को धन्यवाद दें।

और अंतिम लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं

40. जब सब सो रहे हों तो अपने सतगुरु के बारे में सोचें, उनसे बात करें और उनकी सुनें।

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी — अपने जीवन को अमूल्य समझकर सदा श्रेष्ठ कर्म करें।

तपोनिष्ठ सद्‌गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा के पावन जीवन की झलकियाँ

१. सांई टेऊँराम बाबा की वाणी अभेद होती थी. जिससे सभी जाति, धर्म, वर्ण के लोग बड़े मनोयोग से सांई का सत्संग श्रवण करते थे.

२. सांई टेऊँराम बाबा के अखण्ड भोजन भण्डारे का प्रसाद चारों ही वर्ण के लोग बड़े ही भाव से खाते थे.

'मोक हले पई मर्द जी मानी, चारई वर्ण जिमिया थे जानी,
मानो कर्ण कुबेर हो दानी, निर्मोही निष्काम।'

३. सांई टेऊँराम बाबा श्री अमरापुर दरबार, टण्डाआदम सिंध में प्रतिदिन प्रातःकाल योग वशिष्ठ की कथा एवं सायंकाल पारस भाग की कथा करते थे.

४. सांई टेऊँराम बाबा प्रतिदिन ब्रह्मवेला में उठकर ध्यान-चिन्तन में समाधिस्थ हो जाते थे.

५. सांई टेऊँराम बाबा संत-महात्माओं का बड़ा सम्मान करते थे. जो भी संत महात्मा आता था तो स्वयं उनका आदर सम्मान करते, बड़े ही स्नेह भाव से मिलते और ज्ञान चर्चा करते थे, साथ ही उन्हें दरवाजे तक छोड़ने जाते थे.

६. सांई टेऊँराम बाबा सदैव एकांत में बैठकर ध्यान-चिंतन साधना के साथ सत् शास्त्रों का अध्ययन करते थे.

७. सांई टेऊँराम बाबा को स्वर संगीत और राग-रागनियों का निपूण ज्ञान था. एक ही भजन को सोलह सुरों में गाने की दक्षता थी. प्रेम प्रकाश ग्रंथ में जो भी भजन है वे सभी राग-रागनियों में रचे गये हैं.

८. श्री अमरापुर दरबार डिबु पर जितने साधु संत महात्मा रहते थे उनकी देखभाल सार-संभाल सद्‌गुरु सांई टेऊँराम बाबा किया करते थे.

९. सांई टेऊँराम बाबा आश्रम के कार्यों का निरीक्षण कर शेष समय अध्यात्म चिंतन में स्थित रहते थे.

१०. सांई टेऊँराम बाबा दिन में केवल एक ही समय भोजन प्रसाद ग्रहण करते थे.

११. सांई टेऊँराम 'होली उत्सव' प्रायः खण्डू गाँवमें ही मनाते थे.

१२. सांई टेऊँराम 'कार्तिक महोत्सव' स्वामी परमानन्द जी महाराज के प्रेमभाव युक्त स्नेहाग्रह पर परमानन्द भण्डार में ही मनाते थे.

१३. सद्‌गुरु सांई टेऊँराम बाबा जी का सत्संग-प्रवचन सभी जाति, वर्णाश्रम और सभी धर्म सम्प्रदाय के लोग श्रवण करते थे.

१४. सांई टेऊँराम बाबा की ध्यान मुद्रा सिद्धासन-पद्मासन थी.

१५. सांई टेऊँराम बाबा कण्डी वृक्ष के नीचे भी तप साधना किया करते थे.

१६. सिन्ध टण्डाआदम दरबार पर उस समय इतना कुछ न होते हुए भी सांई टेऊँराम बाबा ने भोजन प्रसाद अनवरत चालू किया.

१७. सांई टेऊँराम बाबा के जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियाँ आयीं किन्तु कभी भी किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाया. यहाँ तक कि इकतारा खरीदने हेतु स्वयं मेहनत मजदूरी की. अर्थात् स्वावलम्बी जीवन व्यतीत किया.

१८. सांई टेऊँराम बाबा भोजन प्रसाद भण्डारे में पंक्तिबद्ध संतों के साथ ही करते थे.

१९. सांई टेऊँराम बाबा के भजन-सत्संग में प्रेम दर्द और वैराग्य भरा होता है.

२०. सांई टेऊँराम बाबा डण्डा-चिप्पी और इकतारा सदैव अपने साथ रखते थे.

२१. सांई टेऊँराम बाबा अमरापुर दरबार में स्थित कुँऐं के बीचों बीच एक गुफा में भी बैठकर तपस्या किया करते थे.

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

गुरु से क्या पूछा जाता है ? मंत्र या राय। यदि राय तो बात बिगड़ जायेगी, अशान्ति आ जायेगी। गुरु से राय तब ही पूछनी चाहिए जब कोई शिष्य अर्जुन की तरह मुसीबत में फँस जाये, जब वह अपने निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ हो जाये तब ही राय लेनी चाहिये वरना नहीं।

२२. सांई टेऊँराम बाबा माँस-मछली-शराब आदि निषिद्ध पदार्थों एवं जिन्न, भूत-प्रेत, गण्डा-ताबीज आदि का बहुत खण्डन करते थे.

२३. सांई टेऊँराम बाबा के सत्संग में सरलता, सच्चाई, सहज ग्राह्यता थी. उनकी वाणी प्रत्येक के हृदय में अमिट छाप छोड़ती थी.

२४. जिस प्रकार गुरु गोरखनाथ सिद्धों के साथ बगीचों में या जंगलों में रहते थे उसी प्रकार सांई टेऊँराम बाबा भी संत मण्डली सहित अनेकों बार जंगल या बगीचों में रात्रि विश्राम करते थे.

२५. सांई टेऊँराम बाबा ने स्वयं प्रचण्ड सिद्ध शक्ति से पंथ-मंत्र-ग्रंथ और धाम की स्थापना कर नई अलख जगाई.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सतगुरु हरिदासराम जन्म महिमा भजन

तर्ज़ : हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से

घडी शुभ आई आ, वरी वधाई आ
आयो आ सुन्दर श्याम
ओ मुंहिंजो सतगुरु हरिदासराम – 2

1.घुण्डन जी नगरी में अजु आयो आ अवतारी,
आहे पिता हीरानन्द ज्ञानी माता मोतिल भागनवारी ।
तिनजे घर आयो हली –2 ,
अजु सतगुरु पूरण काम
घडी शुभ आई आ .....

2.सतगुरु जी कृपा सा जहिं पूरण पदवी पाई ।
मन मन्दिर जे अन्दर जहिं ज्ञान जी ज्योत जगाई ।।
नाम जपे गुरुदेव जो–2 ,
कयो हरि में आ विश्राम ।
घड़ी शुभ आई आ ......

3.देवन भी अजु वर्षा आहे गुलन सन्दी वरसाई,
महिमा प्यारे गुरु जी अजु सभिन मिलीं आ गाई
धरती भी सदके वञे – 2 ,
कयो ऋषिन मुनिन् प्रणाम ,,
घडी शुभ आई आ......

संत जीतूराम प्रेम प्रकाशी

तर्ज – उड़े जब–जब जुल्फें तेरी

स्वामी हरिदासराम हैं आये – 2
गांव घुन्डन में आनन्द छाए – 2
लेकर आया अवतारा, गुरु प्यारा

हो..... पिता हीरानन्द झूमते गाये – 2
माता मोतिल मन हर्षाये – 2
लगाएं मिल जयकारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये – 2 ....

हो..... सतगुर की सूरत प्यारी – 2
मैं वार वार बलहारी – 2
गुर है सबसे न्यारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये – 2 ....

हो..... देवी देवता फूल बरसाएं – 2
सब मिलकर झूला झुलाएँ –2
आया है जग हितकारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये – 2 ....

हो..... आज सब मिल देवो बधाई – 2
गाँव घुन्डन में खुशियाँ आयी – 2
''दीपक'' किया उजियारा, गुरु प्यारा
स्वामी हरिदासराम हैं आये – 2 ....

दीपक केवलरामानी

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अपने गुरू पर हजारों बार बलिहार जाऊँ जिसने मुझे पशु से मनुष्य, मनुष्य से देवता और देवता से भगवान बना दिया।

राम नाम की महिमा

एक बार एक गांव में बहुत से महात्मा आकर रूद्राभिषेक कर रहे थे। और वट वृक्षों के पत्तों पर चंदन से श्री राम का नाम लिखकर शिव जी को चढा रहे थे। वह जगह गांव से बाहर थी। वहां एक व्यक्ति अपनी बकरियों को प्रतिदिन घास चराने जाता था। साधु अभिषेक करके वहां से जा चुके थे, लेकिन वह पत्ते वहीं पड़े रह गए तभी घास चरती बकरियों में से एक बकरी ने वह राम-नाम रूपी पत्तों को खा लिया। जब व्यक्ति सभी बकरियों को घर लेकर गया तो सभी बकरियां अपने बाड़े में जाकर मैं-मैं करने लगी लेकिन वह बकरी जिसने रामनाम को अपने अंदर ले लिया था, वह मैं-मैं की जगह राम-राम करने लगी। क्योंकि उसके अंदर राम वास करने लगे थे। उसका मैं यानी अहम् तो अपने आप ही दूर हो चुका था।

जब सब बकरियां उसको राम-राम कहते सुनती हैं तो वह कहती हैं - ''यह क्या कह रही हो?'' अपनी भाषा छोड़ कर यह क्या बोले जा रही है, मैं-मैं बोल। तो वह कहती है - राम-नाम रूपी पत्ता मेरे अंदर चला गया। मेरा तो ''मैं'' भी चला गया। सभी बकरियां उसको अपनी भाषा में बहुत कुछ समझाती परंतु वह टस से मस ना हुई और राम-राम रटती रही। सभी बकरियों ने यह निर्णय किया कि इसको अपनी टोली से बाहर ही कर देते हैं। वह सब उसको सींग और धक्के मार कर बाड़े से बाहर निकाल देती हैं।

सुबह जब मालिक आता है तो उसको बाड़े से बाहर देखता है, तो उसको पकड़ कर फिर अंदर कर देता है परंतु बकरियां उसको फिर सींग मार कर बाहर कर देती हैं। मालिक को कुछ समझ नहीं आता यह सब इसकी दुश्मन क्यों हो गई। मालिक सोचता है कि अवश्य इसको कोई बीमारी होगी जो सब बकरियां इसको अपने पास भी आने नहीं दे रही, तो वह सोचता है कि यह ना हो कि एक बकरी के कारण सभी बीमार पड़ जाए। वह रात को उस बकरी को जंगल में छोड़ देता है। सुबह जब जंगल में अकेली खड़ी बकरी को एक व्यक्ति जो कि चोर होता है देखता है तो वह उस बकरी को लेकर जल्दी से भाग जाता है और दूर गांव जाकर उसे किसी एक किसान को बेच देता है। किसान जो कि बहुत ही भोला-भाला और भला मानस होता है उसको कोई फर्क नहीं पड़ता की बकरी मै-मैं कर रही है या राम-राम। वह बकरी सारा दिन राम-राम जपती रहती। अब वह किसान उस बकरी का दूध बेच कर अपना निर्वाह करता है। राम-नाम के प्रभाव से बकरी बहुत ही ज्यादा और मीठा दूध देती है। दूर-दूर से लोग उसका दूध उस किसान से लेने आते हैं। किसान जो की बहुत ही निर्धन था बकरी के आने और उसके दूध की बिक्री होने से उसके घर की दशा अब सुधरने लगी।

एक दिन राजा के मंत्री और कुछ सैनिक उस गांव से होकर गुजर रहे थे। उसको बहुत भूख लगी तभी उन्हें किसान का घर दिखाई दिया किसान ने उनको बकरी का दूध पिलाया। इतना मीठा और अच्छा दूध पीकर मंत्री और सैनिक बहुत खुश हुए। उन्होंने किसान को कहा कि हमने इससे पहले ऐसा दूध कभी नहीं पिया।
किसान ने कहा-यह तो इस बकरी का दूध है जो सारा दिन राम-राम करती रहती है। मंत्री उस बकरी को देखकर और राम-नाम जपते देखकर हैरान हो गया।

वह किसान का धन्यवाद करके वापस नगर में राज महल चले गए। तभी उन दिनों राजमाता जो कि बहुत बीमार थी, बहुत उपचार के बाद भी वह ठीक ना हुई। राजवैद्य ने कहा - माताजी! का स्वस्थ होना मुश्किल है, अब तो भगवान इनको बचा सकते हैं।

राजवैद्य ने कहा कि-अब आप माता जी के पास बैठकर ज्यादा से ज्यादा ठाकुर जी का नाम लो, राजा जो कि काफी व्यस्त रहता था वह सारा दिन राजपाट संभाले या माताजी के पास बैठे?
नगर में किसी के पास भी इतना समय नहीं की राजमाता

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश
आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है।

के पास बैठकर भगवान का नाम ले सके, तभी मंत्री को वह बकरी याद आई जो कि सदैव राम-राम का जाप करती थी। मंत्री ने राजा को इसके बारे में बताया। पहले तो राजा को विश्वास ना हुआ परंतु मंत्री जब राजा को अपने साथ उस किसान के घर ले गया तो राजा ने बकरी को राम-नाम का जाप करते हुए सुना तो वह हैरान हो गया।

राजा किसान से बोला कि- आप यह बकरी मुझे दे दो। किसान बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर राजा से बोला कि- इसके कारण ही तो मेरे घर के हालात ठीक हुए, अगर मैं यह आपको दे दूंगा तो मैं फिर से भूखा मरूँगा। राजा ने कहा कि- आप चिंता ना करो, मैं आपको इतना धन दे दूंगा कि आप की दरिद्रता दूर हो जाएगी।

अब किसान ने खुशी-खुशी बकरी को राजा को दे दिया। अब तो बकरी राज महल में राजमाता के पास बैठकर निरंतर राम-राम का जाप करती। राम नाम के कानों में पढ़ने से और बकरी का मीठा और स्वच्छ दूध पीने से राजमाता की सेहत में सुधार होने लगा और धीरे-धीरे वह बिल्कुल ठीक हो गई। अब तो बकरी राज महल में राजा के पास ही रहने लगी। तभी उसकी संगत से पूरा राजमहल राम-राम का जाप करने लगा।

अब पूरे राज महल और पूरे नगर में राम नाम रूपी माहौल हो गया।

एक बकरी जो कि एक पशु है राम नाम के प्रभाव से सीधे राज महल में पहुंच गई और उसकी मैं अर्थात अहम् खत्म हो गया तो क्या हम मनुष्य निरंतर रामनाम का जाप करने से हम भव से पार नहीं हो जाएंगे हमे अपने आराध्य देव की शरण में जाना चाहिए...!!

जिसकी जैसी भावना

एक बार एक सन्त कहीं प्रवचन दे रहे थे। अपने प्रवचन खत्म करते हुए उन्होंने आखिर में कहा-'जागो, समय हाथ से निकला जा रहा है।' सभा विसर्जित होने के बाद उन्होंने अपने शिष्य से कहा-'चलो थोड़ी दूर घूम कर आते हैं। गुरु-शिष्य के साथ चल दिए। अभी वे पण्डाल के मुख्य दरवाजे तक ही पहुँचे थे कि एक किनारे रुक कर खड़े हो गए। प्रवचन सुनने आए लोग एक-एक कर बाहर निकल रहे थे। इसलिए भीड़-सी हो गई थी। अचानक उसमें से निकल कर एक स्त्री सन्त से मिलने आई।

औरत ने कहा-'मैं नर्तकी हूँ। आज नगर सेठ के घर मेरे नृत्य का कार्यक्रम पहले से तय था, लेकिन मैं उसके बारे में भूल चुकी थी। आपने कहा, समय निकला जा रहा है तो मुझे तुरन्त इस बात की याद आई।'

उसके जाने के बाद एक डकैत सन्त की ओर आया। डकैत ने कहा-'मैं आपसे कोई बात छिपाऊँगा नहीं। मैं भूल गया था कि आज मुझे एक जगह डाका डालने जाना था कि आपने कहा, समय निकला जा रहा है, यह सुनते ही मुझे अपनी योजना याद आ गई। बहुत-बहुत धन्यवाद आपका।'

उसके जाने के बाद धीरे-धीरे चलता हुआ एक बूढ़ा व्यक्ति सन्त के पास आया । वृद्ध ने कहा-'मैं जिन्दगी भर दुनियादारी की चीजों के पीछे भागता रहा। अब मौत का सामना करने का दिन नजदीक आता जा रहा है, तब मुझे लगता है कि सारी जिन्दगी यूँ ही बेकार हो गई। आपकी बातों से आज मेरी आँखें खुल गईं। आज से मैं अपने सारे दुनियादारी के मोह छोड़कर भगवान् का भजन करना चाहता हूँ।'

सबके जाने पर सन्त ने शिष्य से कहा- 'देखो प्रवचन मैंने एक ही दिया, लेकिन उसका मतलब सबने अलग-अलग निकाला। जिसकी जितनी झोली होती है, उतना ही दान वह समेट पाता है। भगवान् की प्राप्ति के लिए भी मन की झोली को उसके लायक होना होता है। इसके लिए मन का शुद्ध होना बहुत जरूरी है

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सहारे छोड़कर भगवान की शरण लें तो आपको चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होगी।

सेहत बरसात के मौसम में स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

बरसात का मौसम हमारे जीवन में सुंदरता और ताजगी का एहसास लाता है, लेकिन इसी समय विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, इस मौसम में अपने स्वास्थ्य को अच्छी तरह से रखने के लिए निम्नलिखित सुझावों का पालन करें-

1. प्रभावी हाथ-पैर देखभाल- बरसात के मौसम में हमारे हाथ और पैर आसानी से नम हो जाते हैं और संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। सुनिश्चित करें कि आप हर बार अच्छे साबुन और पानी से हाथों और पैरों को धोते हैं, और साफ और सूखे जूते पहनें। इसके अलावा, एंटीफंगल पाउडर का उपयोग करने से फफोले और संक्रमण की संभावना कम होती है।

2. स्वच्छता का ध्यान रखें- बरसाती मौसम में हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए कि हमारा वातावरण स्वच्छ और स्वस्थ्य रहे। इसके लिए, अपने आसपास के इलाके को साफ और सुरक्षित रखें। स्टैग्नेंट पानी को रोकने के लिए जल जमाव को निर्माण करें और मच्छरों के काटने से बचने के लिए मच्छर रिपेलेंट का उपयोग करें।

3. पोषक आहार का सेवन करें- इस मौसम में अपनी इम्यूनिटी को मजबूत रखने के लिए पोषक आहार का सेवन करना महत्वपूर्ण है। फल और सब्जियों को अधिकतम मात्रा में खाएं, क्योंकि वे आपको पोषण प्रदान करेंगे और अन्य संक्रमणों से लड़ने में मदद करेंगे। हल्के और पौष्टिक भोजन करें और बाहर का खाना कम खाएं।

4. पानी की पर्याप्त मात्रा पिएं- बरसात के मौसम में बारिश के चलते अधिक पसीना बहता है और इसलिए हमें अपने शरीर की पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। साफ पानी पीने से शरीर में विषाक्त पदार्थों का निकाल जाता है और स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद मिलती है।

5. बारिशी ब्यूटी टिप्स का पालन करें- इस मौसम में स्किन की देखभाल और बालों की देखभाल का खास ध्यान रखें। अपने चेहरे को स्क्रब के द्वारा नियमित रूप से साफ करें और नमी के लिए मॉइस्चराइजर का उपयोग करें। बारिश के दिनों में अपने बालों को डायरेक्ट बारिश से बचाएं और उन्हें सूखा रखें।

6. व्यायाम करें- बरसात के मौसम में भी नियमित व्यायाम का पालन करें। योग और अभ्यास करने से शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है। घर में या जिम में ही व्यायाम करने की कोशिश करें और सुरक्षित रहें।

7. संक्रमण से बचाव- बरसाती मौसम में संक्रमण का खतरा बढ़ता है, इसलिए अपने आसपास की साफ-सफाई और व्यक्तिगत स्वच्छता का खास ध्यान रखें। हाथों को नियमित रूप से साबुन से धोएं और अपने चेहरे को हर रात को साफ करें। मास्क पहनें और सामाजिक दूरी बनाए रखें ताकि किसी संक्रमित व्यक्ति से संपर्क न हो।

इन सुझावों का पालन करके आप बरसात के मौसम में अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकते हैं। याद रखें, स्वस्थ रहना हमारे जीवन की अग्रणीता होनी चाहिए।

डॉ. विपुल टेकवानी
(BNYS, MD Acu, CMSED)

सद्‌गुरू हरिदासराम वचनावली

आत्म-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान, ईश्वर-दर्शन कोई साधारण बात नहीं, इनका बड़ा महत्व है, और बड़ा ही रहस्य युक्त है। इस रहस्य को जानने के लिये शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। 'श्री रामायण', 'श्री महाभारत' यह कोई साधारण ग्रन्थ नहीं-ऋषिकृत ग्रन्थ हैं। पढ़ना हमें कब पड़ेगा ? जब हमें जाना हो आगे।

इन्दौर में पूज्यपाद संत त्रय स्वामी श्री मुरलीधर जी महाराज, स्वामी श्री गंगाराम जी महाराज एवं स्वामी श्री चेतन प्रकाश जी महाराज का वर्सी उत्सव हर्षो उल्लास के साथ सम्पन्न

इन्दौर । मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज की फुलवारी के संत त्रय शिरोमणी स्वामी मुरलीधर जी महाराज, स्वामी गंगाराम जी महाराज एवं स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज का वर्सी उत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक २१ से २५ अप्रेल २०२५ तक काटजू कॉलोनी, इन्दौर स्थित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, पर प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता एवं सन्त मण्डल की उपस्थिति में में आनन्दपूर्वक मनाया गया । वर्सी मेले की प्रथम सत्संग सभा में श्रीमद्भगवद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पंचदिवसीय पाठों का आरम्भ हुआ. परम्परानुसार श्री प्रेमप्रकाशी ध्वज का पूजन-अर्चन करके उसे आश्रम की ऊपरी मंजिल पर बने शिखर पर स्थापित किया गया. इस अवसर पर सद्गुरु भगवान के पवित्र मुखारविन्द से ध्वजा गीत व साईं टेऊँराम मंगल धुनि का गायन हुआ तो उपस्थित संगत के पैर थिरक उठे, ध्वजवन्दना समारोह में शहनाई ढोल वालों के भी अध्यात्म संगीतमय वादन ने सबको आनन्द से भर दिया.

२१ अप्रेल से २५ अप्रेल तक प्रतिदिन प्रातः ८ से १० व सायं ४:३० से ७ बजे तक सत्संग ज्ञान गंगा का प्रवाह हुआ, जिसमें हजारों हजार भक्तों को आत्मिक मौजानन्द मिला. गुरुदेव भगवान संतों के दर्शनानन्द से प्रेमी भक्तों के जीवन में एक नवीन उर्जा सँचारित हो उठी.

इस अवसर पर विशेष कार्यक्रमों में कन्या भोज, ब्राह्मण भोज, संतों-महात्माओं का भोजन-भण्डारा कर उन्हें यथायोग्य वस्त्र, दक्षिणादि देकर उनका सत्कार किया गया।

संतों के मेले का समापन दिवस २५ अप्रेल को प्रातः ८ बजे श्रीमंदिर में स्थापित श्रीविग्रहों का अभिषेक वेदमंत्रों के उच्च स्वर गायन के साथ पूज्यश्री संत मण्डल के कर कमलों द्वारा किया गया. गुरुजनों व प्रभु परमात्मा के सभी दिव्य स्वरूपों को नवीन वस्त्रालंकार से सुशोभित किया गया. श्रीमंदिर के नूतन दर्शन करके संगत भी आनन्द-विभोर हो उठी.

प्रातःकालीन सत्संग सभा ८ बजे से ११ बजे तक आयोजित थी- इसी सत्संग सभा में रखे गये पाठों का भोग पारायण भी सम्पन्न हुआ. तत्पश्चात् आम भण्डारे में हजारों लोगों ने भोजन प्रसादी पाई.

सायंकालीन सत्संग सभा में गुरुदेव भगवान द्वारा पल्लव पाकर इन्दौर मेले को पूर्णता प्रदान की गई. सद्गुरु टेऊँराम मंगलगान पर समस्त संगत झूमने लगी.

इन्दौर मेले में श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के सेवाधारी वे चाहे पुरुष हो या महिला अथवा युवा वर्ग सबने संत लालूराम के निर्देशन में सक्रियता से समस्त सेवा कार्यो को प्रेम लगन से अनुशासित रहकर किया. वार्षिकोत्सव में दरबार साहब के बाहर मुख्यद्वार के किनारे आम लोगों के लिए अन्नक्षेत्र सेवारत रहा इसमें विविध खाद्य-पेय पदार्थों का वितरण भी निरंतर होता रहा. इन्दौर में प्रति रविवार को साईं टेऊँराम अन्नक्षेत्र का आयोजन प्रेम प्रकाश आश्रम परिवार द्वारा किया जाता है.

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

गुरुदेव से प्रार्थना करें – अब मेरा उद्धार करो
ताकि अन्तिम क्षणों तक मेरा मन नाम में लगा रहे व सांसारिक इच्छा का उदय न हो।

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम चालीहा प्रारंभ

दसों दिशाओं में मच रही सांई सांई टेऊँराम चालीहा महोत्सव की मौज

जयपुर । हम सभी प्रेम प्रकाशियों के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान जयपुर एवं देश विदेश स्थित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर सांई टेऊँराम महाराज का चालीसा महोत्सव का शुभारम्भ बुधवार दिनांक २१ मई २०२५ को बड़े ही धूमधाम से हुआ ।

प्रातःकाल की बेला में ५ बजे हवन-यज्ञ अनुष्ठान के साथ चालीसा महोत्सव का शुभारम्भ हुआ जिसकी पूर्णाहुति सांई टेऊँराम जन्मोत्सव ३० जून को होगी । चालीसा की शुरुआत ब्राह्मणों द्वारा विधिवत श्री मंदिर में पूजा-अर्चना कराके संत महापुरुषों एवं श्रद्धालु भक्तों को तिलक लगाकर रोली मोली बांध कर की गयी। श्री मंदिर में आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के श्री विग्रहों की विधिवत पूजन कर नवीन पोशाक धारण करा पुष्प, इलायची की माली, मिष्ठान्न अर्पित किया गया । इस अवसर पर श्री मन्दिर में मोगरे के फूलों की झांकी सजाई गयी, समाधि स्थल पर विशेष ऋतु पुष्पों का श्रृंगार किया गया । प्रातः कालीन वेला में उपस्थित हजारों भक्तों नें रक्षा सूत्र बंधवा कर आचार्य श्री के समक्ष अपनी मनोकामना रखी । इस अवसर पर संतों ने बताया कि चालीहा के व्रत को धारण करने वाले प्रेमियों को मोली बंधवाना आवश्यक है और इस मोली को ३० जून को स्वामी टेऊँराम जन्म जयंती पर तुलसी पत्र ग्रहण कर खोला जायेगा । हजारों प्रेमीजन अपनी शुभेच्छाओं की पूर्ति हेतु चालीहा महोत्सव में व्रत-साधना कर रहे हैं इसमें भी महिला वर्ग की संख्या बहुतायत में है. विभिन्न धार्मिक पंथीय अनुष्ठान किये जा रहे हैं. हर ओर हर्षोल्लास छाया हुआ है. दरबार पर व घर-घर सद्गुरु टेऊँराम चालीसा का पाठ विशेष आयोजन करके किया जा रहा है. सेवा कार्यों के तहत विभिन्न लोकोपयोगी कार्य सेवा मण्डलियों द्वारा किये जा रहे हैं. जिसमें अन्नक्षेत्र, वानर भोज, गौसेवा, अस्पताल में मरीजों को फल-भोजन वितरण, वृद्धाश्रम में सेवा कार्य एंव अन्य सेवा प्रकल्प किये जा रहे है । जिस ओर देखो आनन्द ही आनन्द छाया हुआ है ।

श्री अमरापुर स्थान में प्रतिदिन ४० दिन तक रोजाना सुबह ५.५० से ६.३० तक (४० मिनिट) हवन यज्ञ अनुष्ठान तत्पश्चात् नित्य-नियम प्रार्थना, सांई टेऊँराम बाबा की महिमा का गुणगान संतों द्वारा किया जा रहा है । समाधि स्थल को प्रतिदिन ऋतु पुष्पों से श्रृंगारित किया जा रहा है ।

देश-दुनिया के लगभग समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में सद्गुरु टेऊँराम चालीहे को अति उत्साह उमंग से प्रेमियों द्वारा संतों के पावन सानिध्य में मनाया जा रहा है. इसके लिए श्रद्धालु भक्तों में असीम उत्साह देखा जा रहा है. समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों/मंदिरों में विशेष शृँगार दर्शनार्थी भक्तों को मंत्रमुग्ध कर रहा है.

 आप अपनी तरफ से सबकी भलाई करते रहो। उनकी गति वे ही जानें।

।। ॐ सत्‌नाम साक्षी ।।

साईं टेऊँराम प्रकटोत्सव
जयन्ती महोत्सव

30 जून सोमवार

जन्मोत्सव 26 जून से 30 जून 2025 घर घर जलाऐं दीपमाला

चहुँदिशि छाई प्रकृति की, अद्‌भुत छटा ललाम। हुए अवतरित भूमि पर, सद्‌गुरु टेऊँराम।।

भगवद् स्वरूप, प्रभु परमात्मा के अंशावतार प्रेम प्रकाशियों के आराध्य, मंगलमूर्ति परमहंस तपोनिष्ठ, ब्रह्म स्वरूप, श्री सद्‌गुरु साईं टेऊँराम बाबा का 139वाँ अवतरणोत्सव, गुरुवार 26 जून से सोमवार 30 जून 2025 को देश-दुनिया के प्रेमप्रकाशी भक्तजन-सत्संगी-श्रद्धालु घर-घर दीप जलाकर 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' का दिव्य जन्मोत्सव प्रकाशोत्सव के रूप में श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाएँ- अपनी आस्था से श्रद्धा सुमन समर्पित करें.

ऐसे मनाएँ साईं टेऊँराम मंगलोत्सव

अवतंरण दिवस पर पवित्र कामना से पँचदिवसीय साईं टेऊँराम अखण्ड जोत भी अपने घर, प्रतिष्ठान, मंदिर, आश्रमों में जगायी जा सकती है. मंदिर-आश्रम, घर-आँगन के प्रवेश द्वारों पर आकर्षक रंगोली द्वारा स्वास्तिक 卐 एवं ॐ आकार का शृँगार, अशोकपत्र व पुष्पों का तोरण (बाँधनी), दीपमाला आदि रंगारंग विद्युतीय सजावट करके साईं टेऊँराम भगवान के अवतंरण महापर्व को श्रद्धा भक्ति पूर्वक मनाएँ.....

ऐसे करें साईं टेऊँराम आराधना

सायंकाल को 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' की प्रतिमा विराजमान कर पुष्पों की सुन्दर सजावट करके धूप-दीप, अगरबती, इत्र की सुन्दर महक के बीच सामूहिक रूप से मंगलगीत, बधाईगान, साईं टेऊँराम चालीसा पाठ, ब्रह्मदर्शनी, गुरु प्रार्थनाष्टक का पाठ करना चाहिये. साईं टेऊँराम संकीर्तन, सत्‌नाम साक्षी महामंत्र जाप, साईं टेऊँराम भजन संध्या, साईं टेऊँराम जन्म साखी का पाठ करके साईं टेऊँराम बाबा की महाआरती सामूहिक रूप से करना चाहिए. साईं टेऊँराम चालीहा व्रतोत्सव पर यदि आपने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ रखा हो तो उसका भोग पारायण आप अपने निकटतम प्रेम प्रकाश आश्रम पर जाकर सामूहिक रूप से करें, यदि आश्रम नहीं है तो घर पर ही उसका विधिवत् भोग पारायण करें.

महाप्रसाद

- फल-मिठाई इत्यादि छत्तीसों प्रकार के व्यंजनों के भोग बाबा को अर्पित करके उसे साईं टेऊँराम बाबा के महाप्रसाद 'ढोढा चटनी' के साथ संगत में वितरित करना चाहिये.
- मंगलमूर्ति 'श्री साईं टेऊँराम बाबा' के दिव्य अवतरण दिवस को दीपोत्सव - आनन्दोत्सव के रूप में पूरे संसार भर के भक्तजन श्रद्धाभाव से मनाकर साईं का आशीर्वाद प्राप्त करें.
- सभी भक्तजनों को अवतंरण दिवस की अनन्त-अनन्त बधाईयाँ व बाबा की महती कृपा सदैव हम सब पर बरसती रहे, ऐसी पवित्र शुभ कामनाएँ ! सभी की शुभ मनोकामनाएँ साईं टेऊँराम भगवान पूरी करें !

लें शुभ संकल्प

सोमवार, 30 जून 2025 **'साईं टेऊँराम बाबा की जयंती'** के पावन अवसर पर हम सभी भक्तजन लें एक शुभ संकल्प-

आज से हम माँस, मछली, अण्डा, शराब, जुआ, पान मसाला, गुटखा, बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू आदि पदार्थों का सेवन कभी नहीं करेंगे तथा जीवन में क्रोध -गुस्सा नहीं करेंगे, सदा सत्य मार्ग पर अपना जीवन चलाएँगे. ऐसा शुभ संकल्प सभी जरूर लें!

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जब आप दूसरों को सुखी करते हैं, तो स्वयं भी सुख का अनुभव करते हैं। फिर क्यों दूसरों को दु:खी करते हैं।

समाचार डायरी / अक्षय तृतीया का पावन पर्व सम्पन्न

जयपुर। श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर अक्षय तृतीया का पावन पर्व मनाया गया। इस अवसर प्रातः काल नित्य-नियम प्रार्थना के बाद पर परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन श्रीमुख से अमृत वचनों का रस पान कर श्रद्धालुओं ने अपने को धन्य किया। इस पावन अवसर पर श्री अमरापुर जल मंदिर में प्रसाद के अतिरिक्त श्रद्धालुओं के लिये छाछ एवं गन्ने के रस का वितरण भी किया गया।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिये ? मुक्ति।

हमें भी सीखना है, दिल चुराना आपसे सत्गुरु

हमें भी सीखना है,
दिल चुराना आपसे सत्गुरू,

जाने कैसी अदा है, जादू कैसा करते हो सत्गुरू,
हमें भी सीखना है, दिल चुराना आपसे सत्गुरू,
शरण में आऐ को अपना बनाना, सीखना तुमसे,
सीखकर, आप जैसा ही हमें बन जाना, है सत्गुरू,

सभी में आप रहते हो, मगर दिखाते नहीं हमको,
ये कैसी नींद में हम सो रहे, हमें जागना सत्गुरू,
कलाकारी ये कैसी है, जाने कैसा तमाशा सा,
हमें भी सीखना है, दिल चुराना आपसे सत्गुरू,

हमीं पे राज सब जाहिर, हमीं से राजदारी है,
ये स्वासें हैं नकद की, इनकी कोई ना उधारी है,
सभी के सामने रहकर, भी सबसे रहते हो अलग,
सीखकर, आप पर ही आजमाना, है हमें सत्गुरू,

तुम्हारी वाणीं वंशी सी, जैसे वीणा का कोई स्वर,
कर्म के लेख कटते हैं, तुम्हारे इक इशारे पर,
हृदय में हो छवि तेरी, बसे ज्यों मृग में कस्तूरी,
सिमरना फेरकर तुमको, प्रकट करना हमें सत्गुरू,

हमें भी सीखना है,
दिल चुराना आपसे सत्गुरू,

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा,
समालखा मण्डी (हरियाणा)

हे मुरलीधर छलिया मोहन, रंग डाल मेरे मन काले पे

हे मुरलीधर, छलिया मोहन, रंग डाल मेरे मन काले पे,
तेरा रंग ये कभी फिर, छूटे ना-2, इस मन-मौजी, मत वाले से। हे मुरलीधर,........

1.जिस पर तेरी प्रीत का रंग चढे, दिन रात वो, तेरा नाम जपे, जिस, पर तेरी.........
मैं, रंग में ही तेरे, रंग जाऊँ - 2, पी जाऊँ, नाम प्याले से,
हे मुरलीधर, छलिया मोहन, रंग डाल मेरे मन काले पे,
तेरा रंग ये कभी फिर छूटे ना-2,इस मन-मौजी मत वाले से।
हे मुरलीधर,........

2.तेरी मुरली से ऐसे रंग बरसें, इस रंग से भीगे तन-मन ये,
तेरी मुरली से ऐसे........
रंग छूटे ना ये, जीवन भर - 2, बलिहारी मैं मुरली वाले पे,
हे मुरलीधर छलिया मोहन, रंग डाल मेरे मन काले पे,
तेरा रंग ये कभी फिर छूटे ना-2,इस मन-मौजी मत वाले से।
हे मुरलीधर,........

3.सब, कहते हैं तुम हो सुन्दर, इक बार ना मैंने, देखा मगर,
सब, कहते हैं तुम........
दो दर्शन तो देखूँ, जी भर-2, अन्दाज को मुरली वाले के,
हे मुरलीधर छलिया मोहन,रंग, डाल मेरे मन, काले पे,
तेरा रंग ये कभी फिर छूटे ना-2,इस मन-मौजी मत वाले से।
हे मुरलीधर,........

4.तेरी महिमा 'वधवा' गाता रहे, तेरे जी भर नाज, उठाता रहे, तेरी, महिमा 'वधवा',.......
मैं लाल शर्म से, हो जाऊँ-2, तेरी, कृपा के रस प्याले से,
हे मुरलीधर छलिया मोहन,रंग, डाल मेरे मन, काले पे,
तेरा रंग ये कभी फिर छूटे ना-2,इस मन-मौजी मत वाले से।
हे मुरलीधर,........

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा,
समालखा मण्डी (हरियाणा)

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जिस किसी को भी भगवान की भक्ति करनी है तो
वह अपने मन को बार-बार समझाने का प्रयास करे।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर
सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज
का यात्रा कार्यक्रम

16–21 मई 2025	जकार्ता
22–26 मई 2025	मेलबोर्न (ऑस्ट्रेलिया)
27 मई 2025	यात्रा
28 मई 2025	जयपुर
29 मई से 01 जून 2025	अजमेर (सद्गुरु टेऊँराम वर्सी उत्सव)

व्रत–पर्व–उत्सव

16 मई 2025–शुक्रवार– गणेश चर्तुर्थी
21 मई 2025–बुधवार– सांई टेऊँराम चालीसा प्रारम्भ
23 मई 2025– शुक्रवार– एकादशी
26 मई 2025– सोमवार– सोमवती अमावस्या
28 मई 2025– बुधवार– चन्द्र दर्शन
01 जून 2025– रविवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
01 जून 2025– रविवार– सांई टेऊँराम पुण्यतिथि
05 जून 2025– गुरुवार– श्री गंगा दशहरा
07 जून 2025– शनिवार– निर्जला एकादशी
11 जून 2025– बुधवार– पूर्णिमा
14 जून 2025–शनिवार– गणेश चर्तुर्थी
22 जून 2025– रविवार– एकादशी
25 जून 2025– बुधवार– अमावस्या
26 जून 2025– गुरुवार– चन्द्र दर्शन
26 जून से 30 जून 2025– आचार्य सद्गुरु टेऊँराम महाराज का 139वां जन्मोत्सव मेला
27 जून 2025– शुक्रवार– भगवान जगन्नाथ रथयात्रा
30 जून 2025– सोमवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस), सांई टेऊँराम चालीसा पूर्ण, सांई टेऊँराम जयंती

अमरापुर गमन

श्रीमती भगवन्ती चन्दनानी

जयपुर। श्रीमती भगवन्ती चन्दनानी धर्मपत्नि अमरापुरवासी श्री मोहन चन्दनानी, आयु ७१ वर्ष, दिनांक १८ मई २०२५ को अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर गुरुगोद में श्री अमरापुरधाम सिधारी। रक्त संबंध से आप अमरापुर नवयुवक मण्डल जयपुर के अध्यक्ष श्री कुमार चन्दनानी जी के बड़े भ्राता की धर्मपत्नि थी।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सदगुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश वैराग्य के बगैर भगवान की इस माया से कोई भी छूट नहीं सकेगा।

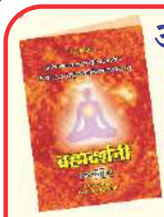

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं अप्रेल २०२५ अंक खां अगिते-

।। दशपदी - 18 ।।

साचे मीठे वचन उच्चारे, सन्त गुरु हरि दरस निहारे।
सत् शास्त्र पुनि हरि जस सुनता, गोबिन्द के गुन सदहीं गुनता।
जागत सोवत करत विचारा, हरदम करहैं सत्य व्यवहारा।
असत् पदार्थ सर्व त्यागे, सत्य वस्तु में नित अनुरागे।
राम रंग में मति जिस रंगी, कह टेऊँ सो है सत्संगी।। 4 ।।

हिन दशपदीअ में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जनि 'सत्संगी'अ जो वर्णनु कयो आहे. स्वामी जनि आखिन था, "जेको सचा ऐं मिठा वचन गाल्हाए/चवे थो ; जेको संतनि, गुरूअ ऐं ईश्वर जो दर्शनु करण लाइ निहारे थो; जेको सत्शास्त्रनि ऐं भगवान जे जस जूं वार्ताऊं बुधे थो; जेको सदाईं गोविंद जा, प्रभूअ जा गुण गाईंदो रहे थे; जेको जागंदे ऐं सुम्हंदे वीचारु करे थो, ईश्वर जे बारे में सोचे थो; जेको सदाईं सच जो वहिंवारु करे थो, सचाईअ सां हले थो; जेको कूड़ा पदार्थ त्यागे छडे थो ; जेको सदाईं सचनि पदार्थनि/गाल्हियुनि सां प्रेमु करे थो; जंहिंजी बुद्धी राम/परमात्मा जे रंग में रङियल आहे, उहो 'सत्संगी' आहे."

'सत्संगी' कंहिंखे थो चइजे? सत्संगी केरु आहे? जेको सत्संगु, सच जो संगु करे थो उहो सत्संगी आहे. सत्संग जो अर्थु छा आहे? सत्संग जो अर्थु आहे परम सत्य जी संगति, गुरुअ जो संगु या माण्हुनि जी अहिड़ी सभा, जेका सचु सुणंदी आहे ऐं सच जी गाल्हि चवंदी आहे. सत्संग में प्राचीन ग्रंथनि जूं गाल्हियूं बुधियूं या पढ़ियूं वेंदियूं आहिनि. महापुरुष या संत उते प्रवचनु कंदा आहिनि. सत्संग में वेंदड़, संतनि जो संगु कंदड़ खे सत्संगी चवंदा आहिनि. सिरफु जेको उपदेश बुधण ताईं महदूद/सीमित रहे, उनखे पहिंजे हलति चलति में न वापरे उहो सत्संगी चवाइण जोगो कोन्हे पर जहिं पहिंजी वाणीअ खे सुधार करे मिठो बणायो आहे, कड़ो अखरु-कहिंजी दिल खे रंजाइण वारो अखरु नथो गाल्हाए उहो सचो सत्संगी आहे ।जहिं पहिंजे मन खे वीचार शील बणायो आहे- सुठी तरह वीचार सां जहिंजे जीवन जो हर कार्यु हले थो, उहो सचो सत्संगी आहे दुन्यवी पदार्थनि खां जहिं पहिंजो मनु हटाए छदियो आहे सो सचो सत्संगी आहे ।

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालयः प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें–

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)